



भारतीय आदर्शनारं  
सती जसम।

जिसको  
भारतीय सन्नारियों के हितार्थ  
श्रीमती स्वर्गीया राजकुंर वार्ड की पुण्यस्मृति म  
श्रीमती सेठाणी आनन्दकुंर शार्ड की तरफ से  
संस्कृत

सम्पादक—

बालचन्दजी श्रीश्रीमाल

प्रकाशक

सेठ बदीचदजी वरदभानजी पितलिया  
बेकर्म रतलाम

स्थमावृति }  
१००० }

मूय  
सदुपयोग

{ धीर निर्वाण  
सं० २५७०

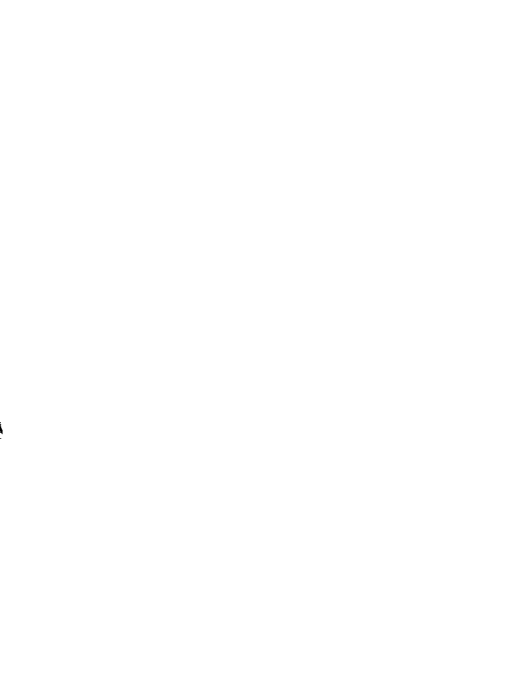
प्राप्तिस्थान—  
श्री मा० जैनपूज्य श्रीहृक्मीचदजी महाराज की  
मम्प्रदायका  
हितेच्छु श्रावक मडल  
रतलाम

---

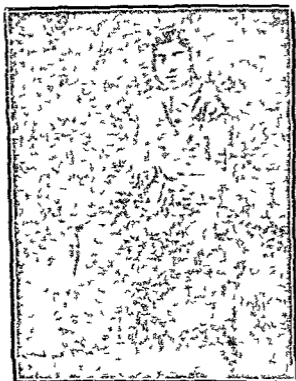
पोस्टचार्ज के लिये =) दो आने के टिकिट आने पर  
भेजी जावेगी ।

---

मुद्रक—  
बाबू बिम्बनलाल जैन द्वारा  
आदर्श प्रिंटिंग प्रेस, अजमेर



जिनकी पुण्य स्मृति में यह पुस्तक भेंट दी गई है



श्रीमती सीभाग्यवती राचरुंजरनाई

जन्म सं० १९८१

निधन म० २०००

वैशाख कृष्ण ३

फाल्गुन शुक्ल १

२० साल २०

## चित्र परिचय



मालवान्तर्गत रतलाम शहर में सेठ अमरचन्दजी साहय पितलिया प्रसिद्ध पुरुष हो गये हैं आपकी रयाति समाज में व्याप्त है। आप, ससार पक्ष में श्रीमन्त लक्षाधिपति एव राज्यमान्य पुरुष थे। रतलाम, नरेश महर्षि महाराजा श्री रणजितसिंहजी साहय बहादुर ने आपको सेठ, पदवी व दो घोड़ों की बगी पनायत की थी तथा पालखी आदि अन्य लबाजमा भी बक्षा था जो कि साधारण लोगों को रियासतों में नहीं दिया जाता।

श्रीमान् सेठ साहय राज्य मान्य होने के साथ ही साथ प्रजा में भी गण मान्य पुरुष थे। रतलाम के साहकारों में आपकी दुकान प्रतिष्ठा पात्र मानी जाती है। सार्वजनिक कार्यों में विशेष भाग लेते थे इससे जनता आपको सम्मान की दृष्टि से देखती थी। धर्म पक्ष में भी आप बद्धावान एव विशेषज्ञ थे बड़े २ आचार्यों व सन्तसतियों की सेवा की थी व उनकी याणी धषण करके मनन करते थे जिससे आपकी प्रज्ञा बहुत तेज बन गयी थी जल में तेल की तरह आपका ज्ञान सुविस्तृत बन गया था जिससे शास्त्रीय

गूढ तरुवां का समाधान थाप उत्तम शैली म करत म यही कारण है कि बाहर मे जिज्ञासुओं के प्ररन आया हो करते थे ।

भोरवी का परे म के समय राजबोट गियामी राव महादूर भीमती माइ भोरारणी तो आपकी प्रहरय बेप में साधु क सम्बो घा से पहचान कराते थे । और आपको गुरु रथा पर मााकर सम्मान करते थे । पेस नर ररा की पौत्री थाइराअ कुवर का यह पित्र है ।

सेठ अमरधन्दी के सुपुत्र सेठ वरदभाणजी साहब को स्थानक धासी जैत समान में कौन पेसा होगा जो नहीं जानता हो आपका स्वर्गास हूण स्वल्प समय ही हुआ है परन्तु समाज आपको बार बार याद करती है । आपके बियोग का दुख बहुतो है । आप भी अपने पिता की तरह समान म चमकते सितारे थे ससार पक्ष एवं धर्म दोनों में आप प्रतिष्ठित मान जाते थे ।

भीमती राजकुवर थाई गिमका चित्र आपक ममत्त है स्वर्गीय सेठ वरद भाणजी साहब की पुत्री थी सुसखारों के कारण बचपन में ही धार्मिक एवं व्यायहारीक शिक्षा प्राप्त हो गई थी । स्वभाव से हंसमुख एवं मिलनसार प्रकृति की थी । इनका विवाह मन्द-सौर निवासी भीमान् सेठ फताजी तिलोकचन्दजी की फम के वारिशान म से कुवरजी भी सूरजमलजी साहब महेता के साथ म- १६६६ मे हुआ था । विवाह होने के ढाई वर्ष बाद आपको एक पुत्र का प्रभव हुआ था उसी अरशे में मठ वरद भाणजी साहब का

स्वर्गवास हो जाने से इनको पिता श्री की अन्तिम भेंट न होने के कारण गहरा आघात पहुँचा। शारिरिक निर्धलता में यह मानसिक आघात लगने से इनके शरीर में विमारी ने जड़ घाल दी जो कुछ समय बाद भगकर रूप धारण कर गई।

सेठ वरद भाणजी साहब की सन्तानों में पुत्र न होने से बाई की विधवा माता ने सभी शक्य उपचार किये परन्तु सफलता प्राप्त न होकर निराशा ही साम्हने आयी तब आपकी माता ने हिम्मत धारण कर आलोचना व त्याग प्रत्याख्या करके धर्म श्रवणादि साज दिया। बाई ने भी अपने जीवन की यह दशा देखकर सबसे क्षमा याचना करते हुए परमात्मा के शरण में अपना जीवन समर्पण कर दिया।

इनकी पुण्य स्मृति में रूपे पदरहमो श्रीमान् सेठ सूरजमलजी साहब महेता ने और रूपे एक हजार श्रीमती सेठाणीजी आनन्द कुंवर बाई ( इनकी माताजी ) ने निकाले जिनमें से कुछ रकम तो छुट कर जन हितकारी कार्या व सस्थाओंको दी है और यह पुस्तक बाई की "पुण्यस्मृति" में आपके कर कमलों में पहुँचाई जाती है।

भवदीय

बालचन्द्रश्रीमाल



## प्रकाशक का निवेदन

यह क्रान्तियुग है इसमें प्रत्येक मनुष्य अपना उन्नति के लिये प्रयत्न कर रहा है किन्तु हमारे अज्ञान ब्रिचों का स्वयं इस माक बहुत कम दिमाग देता है। ये अपने मात्र शृंगार और परेशु कार्या में ही अत्रकाय नहीं पाती हैं न इनकी समुचित शिक्षा का ही प्रयत्न है न इनके मानने उतम आत्मा ही है।

श्री माधुमार्गी जैनपूज्यश्री हुकमीचन्दनी महाराज की सम्प्रदाय का विवेच्यु धारकमण्डल के अर्धतनिक मत्री श्रीयुत घालचन्दनी श्री श्रीमान न यह पुस्तक तैयार की थी किन्तु वर्तमान युगेषिय महानुद्ध क कारख मायन माममी का अत्यधिक महगाई के कारण प्रकाशित नहीं करपाये।

इधर विरु थाई राजकुवर का अमामयिक वियोग होजाने से नसकी लौकिक क्रियाओं में विशेष व्यय न करते हुए उसकी पुण्य स्मृति म फोर्ड म्रियोपयोगी कार्य करन की मेरी इच्छा हो रही थी कि यह पुस्तक मेरे निगाह में आगयी देखने से स्त्री जाति के उत्थान म, न्तको अपनी वास्तविक स्थिती का भान कराने में तथा अपना धम कम समझन समझाने म अत्युपयोगी मालुम दुर्द इमलिये यह पुस्तक धाइ थी पुण्य स्मृति में प्रकाशित करता हूँ।

यहां यह प्रकट करना भी उचित प्रतीत होता है कि उक्त पुस्तक का भेटर श्रीयुत घालचन्दनी ने सहर्ष निःशुल्क दे दिया है एतदर्थ में उनका आमार मानता हूँ।

# आभार प्रदर्शन



कोई भी लेखक साहित्य तैयार करता है तो उस किसी न किसी प्रमाण भूतसाहित्य या धक्का का आधार लेना ही पडता है विगेर आधार लिये तो अतिशय ज्ञानी ही स्वतन्त्र प्रति पादन कर सकते हैं। श्री मज्जैनाचार्य स्वर्गाय पुण्य श्री १००८ श्री,जवाहिर लालजी महाराज साहन के सुशिष्य श्री श्रीमलजी महाराज स० १९६० में दक्षिण पधारते समय यहा विराज थे उस समय भावना धिकार मे यह कथा गरनी सहित गायन करके फरमाई थी तब मेरे हृदय में यह स्फुरणा हुई थी कि ऐसी कथाओं को साहित्य के रूप में जनता के समक्ष रखी जाय तो ससार का धौर खास कर रती जाति को अधिक लाभ हो सकता है क्यो कि हिन्दु जाति में से हलकी मानी जाने वाली ओड जाति में भी ऐसी २ धीराग नाण हुए है जिहोने अपूर्ण त्याग का उन्चादर्श रख कर अपने पति व्रत धर्म की रक्षा की है तब आज उन्च हिन्दु जाति में उत्पन्न हुई स्त्रियों को क्या करना चाहिये और क्या कर रही है इसका बोध पाठ मिले। परन्तु कुछ समय तक तो वह स्फुरणा यों ही रही याद भाव नगर से प्रकाशित होते हुए जैन पत्र के भेंट स्वरूप "शान्तु महता" के भाग आये उनको देखने पर तीसरे भाग में कुछ प्रकरण "सती जसमा" के पढने में आये वे पढते ही इसे

प्रियत करने की मेरी इच्छा बलवती

# शुद्धिपत्रक



प्रक सशोभन करते हुए भी असावधानी से शुद्ध २ भूलें रह गई हैं सो सुधार कर पढ़ें ।

पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२	६	परन्तु	०	५१	३	तरात	तटात
३	२	नरीक्षक	निरीक्षक	५१	३	सन्दरयता	सन्दहता
३	६	उठे	उडे	५२	७	जाति	जाता
५	१४	एव	एवं	५२	१५	स्मृतिपरम	स्मृतिपट
८	०	मनोने	मनोन	६४	५	बैठे	बैठ
८	८	विकत	विश्रुत	६८	१६	पिछा	पिछला
१८	१०	देते हुए	देती हुई	७५	१०	बालद	बलद
१८	१६	मान	भान	८७	११	छोडाना	छोडना
२६	३	प्रत्युर	प्रत्युत्तर	८७	१२	छोडना	छोडाना
३६	११	मारै	मीर	८६	१४	मीनलदेवी	मीनलदेवी
३६	१८	लोगों का	लोगों की	६१	७	स्तसान्	स्तध
४०	५	जाते हैं	हो जाते हैं				

इसके सिवाय सबसे बड़ी भूलें तो कई जगह पैरा बदलने, तथा वाक्यों को ठीक रूप में जमाने की है जिससे भाव समझने में गरषड हो जाती है । परन्तु वह शुद्धि में नहीं की जा सकती ।

सन् १९४४ ।

सम्पादक

# कवित्त

शारसी— महोम पडे मन्दिर पडे, पड नाम नठाम ॥

एक पडे नहीं जगत में, यश कीर्ति अभिराम ॥ १ ॥

( पूनमचान्दनी का चाल में )

गरबी— गाजे पाटणपुरमा गरबी गुनरनो धखीरे,

सांधो सखलो पेलो सोलकी सिद्धराज,

जैनी कीर्ति व्यापीरही छे आजगमाधखीर ॥ १ ॥

तणे लोको फाने धाव कुवाधधावीयारे

मोटा मान सरोवर देवल धाम विशाल,

पोपी सव प्रजा ने शत्रु सव त्भावीधार ॥ २ ॥

शाखी— धैर्यवान गुणवान छे, शूरवीर नीतिमान् ।

सोलकी सिद्धराज ए गिरवागुण नी खाण ॥

गरबी— तणे पाटणपास एक सगोवर आदर्युर

खोदे खाडाल्यातो मालवां ओड अनक,

ओडणो पालेनाखे सारी माटी टोपलारे ॥ ३ ॥

शाखी— ओडकेरी नारीओ, ज्याकरतीनानारंग ।

हसती खुदती दोइती, रेलती प्रेम अभंग ॥

गरबी— पाले वडनी डाले भूले धालक पारणरे,

माटी लेवा जसमा भुलाये निजवाल,

धलतां मुखड पेलो जाय कबर ने धारणरे ॥ ०० ॥

- शास्त्री— प्रेम नाजाय जममावणो द्विद्वेद्राजमज्जीन ।  
हाथेभूषाय बालन, द्विद्वेद्रामोहनमोर ॥
- गरबी— मादयदाहरता राचाण दन्तो परीर  
जाते रूपाक्षी रंगीक्षी परम चतुर,  
पासजहनराजाकरद्वेमुण्णत् मुन्दरीरे ॥ ५ ॥
- शास्त्री— जसमानेदेखीवगी, राचाभूल्यो भाग ।  
अणुबिषापाडरने कोणमारेद्वयाण ॥
- मिद्धरा— माटीबडेवान आकोमलकायाकरीनयीरं,  
पाजामीने तू रोजब तारो बाल,  
घोची ओडणी छे काम करे तारी बतीर ॥ ६ ॥
- शास्त्री— नरममुद्दालीदेहता, सीदनेतू कर माय ॥  
कडाबलाडेबालन, लेणारयेणो साध ॥
- जसमा— जसमा कइ छराजरा, काम करो खाबुगमेरे  
मुभनेपेसीगहता घाघ अगेरोग  
मारानवरदहाडा येठेनधीजाएकवीरे ॥ ७ ॥
- शास्त्री— ह्दायहमारोघाराधे उरमात्रेपतिभाव  
द्वैयु मुहालु होयत्यां, शु कायानु काम ॥
- सिद्ध— जसमा जंगलमा बसवाने तू सरजीनधीरं  
मारानगर तणो तू आचीने जो नोक,  
पाण्ण पुरनीशोभा हु तुजनेशीकहुरे ॥ ८ ॥
- शास्त्री— बसे जगलमाहरणिया, बसे वाघने नाग ॥

जसमा धनमांसिदने धमेनी सुन्दर बाग

जसमा— राणा अन्धारी शेरी ने ऊंधी मडियोरे,  
तेमां माणसमाटे चाल्यानोनहीमार्ग,  
जाणे उनाले उभराती देखु कीडीओरे ॥ ६ ॥

शास्त्री— वसेव्हालनीबाघणो वसेसिही सुनाण ॥  
शुवसोजाखेजगले वीकणनरनादान ॥

सिद्ध— जसमामाणसबहुदेखीगेतू घेलीधनेरे  
ताराहलकामनमाऊठे हलकाघाट  
नकले खाखरानी खिस कोली शाकरनादनेरे ॥ १० ॥

शास्त्री— शहरीजनना सुपनी कीडीने शुभान ॥  
खर शाकरने अथगणे सुणेन मीठुखान ॥

जसमा— राजामेलामन माणमना मेला शहेर नारे,  
मेली गलियोमां धहुमारे छे दुगन्ध ॥  
मेला जहरतणाजीघो छे जीवेजहर मारे ॥११॥

शास्त्री— निर्मल खीमकोलीअहा टेडकने न सुहाय ॥  
फादव भोगी थापडां कादनममलकाय ॥

सिद्ध— जसमा राजाना दरबारी तें जोया नधीरे,  
तेमां बाग वगीचे खील्या छे धहु फूल,  
जलना होज फु धारा उडे आवीजो सहीरे ॥१२॥

शास्त्री— उचो गढ़ दरबारनी, गोस्ते गोरी गाये,  
जाणो स्वर्गनी सुन्दरी, रही अहीं लोभाय ॥

जसमा— राजा जगल आगल नाग वगीचा धूल छेरे,

जेवो सूरज आगल तारानो चिलफाट,  
मारा जंगलनी मोचुतो मोघे मूल्य छेरे ॥१३॥

शाखी— सोना न फदि पाजरे, मेना जो पुराय ॥

त्यावा पीता भखती जगल नी वनराय ॥

सिद्ध— जसमा जगलनी वातो तू आज विशारजैरे,

मीठा नरघाने सारगो केरासुर,

गायन सुणवान वाचे तू म्हेले आवजरे ॥१४॥

शाखी— महले महले माननी, छे गाने शुलवान ॥

तेने नयण निरखवा, भूलो जगल भान ॥

जसमा— राजा नव रीभु नरघा मारमी सूरधीरे,

मेना मोर पपैये टेठ्या छे मुक्कवान,

वातो कोयलनाटहुकानी तो हुँकहेवी नवीरे ॥१५॥

शाखी— जड मा राचे जड घोया, चेतन चेतन तान ॥

मुक्क भावे छे कोकिला करती पचम गान ॥

सिद्ध— ओडण आघो तो उतारु मन्दिर मालियेरे,

रहनो मित्र सद्दो दर सर्व सम्बन्धों साथ,

तमोने प्रियजनो मानीने निशदिन पालशु रे ॥१६॥

शाखी— राज्य भुवने आवीषसो, वननी छोडी आश ॥

हेमहिँडोले दिचनो, माणो दिव्य विलारा ॥

जसमा— ओडण ने उत्तरवाजोइये मुपडारे,

मेहीमाने चढता मुभने आवेपेर,

पहतां पग भांगिने काया थड़े जाय कुचड़ीरे, ॥१७॥

साखी— बडबड़ाई बहलातणी, ममहिडौलाखाट ॥

पृत्तवेली आयास छे, शु फहुँवननी धावा ॥

सिद्ध— ओडण आवां तो पिरसाऊं मेवा चूरमारे,

मुने हायी घोड़ा गुजरपतिने द्वार,

तेने पेरीने हर्षासो ओडण ऊरमारे ॥१८॥

माखी— सोना केरा थाल ने, रत्न जडित बाजोट ॥

समो रमो जसमाप्रिये, मुकीमननी छोट ॥

जसमा— राजा ओडण ने व्यालुनोइये घेसनारे,

राजा शुद्धे मारे हय हायी नु काम,

तहाँ ने दुय मजेना मारे भुरी भँसना रे ॥१९॥

साखी— पागीपीपणनीरनु फूसथी घेला छवाय ॥

पामीपीपणनीरनु, तेजपले करमाय ॥

सिद्ध— ओडण मांगोल्थोने आधाराशालु ओडनारे,

हीरा माण्के मोती सोनाना सिणगार,

आधी कचन बरणी काया पर शोभेणारे ॥२०॥

साखी— हीरा कसी जरियन तणा रेशमी चोली चोक ॥

ओडण ओडोहोंसथी ते विन जीव्यु फोक ॥

जसमा— राजा लाडाटकसे आछातो फाटीजसेरेफो

नाखु घास चणोठी गठीकठे हार,

हीरा मोतीने सोना मा तरकर भयवशेरे ॥२१॥



- सानी— भीष्माशक्तिम हायना, जाड़ा थोह ओइए ।  
पतिथी काई बालू नधी, रेशमी जरीयनमेन ॥
- सिद्ध— जसमा फरे मू मुग्घने केथोद्रे तारो पति रे,  
तारा जेवी समनु नारी जेने पेर ॥  
पना जेवी मुखियो आनगमा बीनोथीरे ॥२२॥
- सासी— तुजबाकिमनीवातडी, देगुथी मानेल ।  
प्रेमी युगल ते आंगणे, छेमदारंग रेल ॥
- जसमा— पदलो केह कसीने काम परे मारो पति रे,  
जेनामोलीडामाब्देक छे महुपुल ॥  
जेनी कोदाली ना पाथी धरती धूनतीरे ॥२३॥
- हासी— घात कहुँ शु ब्दालनी, मुख थी वही न जाय ॥  
सगहु दोतो सभग खो, आ नयण घरताय ॥
- सिद्ध— जोने कामकरता जुएए तारामतीरे ।  
पेनामनमा तारो पुरो नहीं विश्वास ॥  
तारी बुक नजाणे जसमाए तारो पति रे ॥२४॥
- सानी— गामटियो गुण थोर ते, शु जाणेमेमनी रीत ॥  
व्हेमीए छे मेलङ्गी शु चाहे तुज चित ॥
- जसमा— राचा साधाने भय लेश नधी संसार मरि ।  
मारा पति ने मारो पुरण छे विश्वास ॥  
हुँ तो अन्य जनो ने भाइ गखी रहूँ भारमारे ॥२५॥
- सासी— चितहुतो में आपियु गामढिया ने हाथ ॥

मुञ्ज उर गगने ना दिस, एविण्डुजोनाथ ॥

राजा— जसमा राजा अरु राणा न हुँ सावकरू रे,  
मोटा महारथी पण साम न आव गोल,  
तोपण तारा उपर हुम्न कटी नहीं आरु रे ॥२६॥

साखी— जसमा वसमा रायने कही दे दिलनी यात ॥  
जोर नथी ताराकने नहीं करतो उपात ॥

जसमा— राजा फायाने माया पर बल नृपतु वस्थुरे,  
प्रभूण जीव धरणे छे जूदो काया माय ॥  
भारे भूप तणु बल तेपर नव चाले कशु रे ॥२७॥

साखी— मनहु आ तनमा नथी, मन थी दुरे नृ ॥  
मारा बालिम ऊरमां, वसे सदारसपुर ॥

सिद्ध— जसमा द्रढता तारी देखी विस्मय थाय छेरे ॥  
आवा दम्पतिने पण आखिर होय वियोग ॥  
मिध्या आजगना सुख मारे मन भुजाय छरे ॥२८॥

साखी— नेकटकेधारी सती धन्य ० अवतार ॥  
दम्पति केरा दिलमां सत्य प्रेम प्रचार ॥

जसमा— राजा कोई न जाणे काले मारु शु थसेरे,  
एवी अल्प जिन्दगी भाणे आ सौ लोक,  
रूढी रेणी सुख परलोके पूरण आपशरे ॥२९॥

साखी— बुठो आ संसारछे, भुठो जग व्यवहार ॥  
सांची स्वामि सेव छे, सत्यएज संमार ॥

सिद्धराज—जसमा पहेलु के आषीजु परलिह ताहररे,  
 द्योहण फ धो तारो म्यामि प्रये प्रेम ॥  
 मारा महेल थी सुग छे केवुँ तारे मुँ पटेरे ॥३०॥

जसमा—राजा आलोके परलोखं मारोये पतिरे  
 प्रितेपरण्या माटे छोहूँ मारा प्राण  
 पना शत्रुनुँहुँ मुग्य कट्टी जोनोनधीरे ॥३१॥

पवुँ कहीने जसमा टोपल् लेटपाछी करीरे,  
 राय लीबोवलतो पाटण केरो पथ,  
 धइछे जसमा ना पतिप्रव नो ग्यातरीरे ॥३२॥

राजा जसमानोरस्मी थी विहल तो थयोरे,  
 निसदिन आवे मनमा जसमाना विचार,  
 पनी भुख तरमन निद्रा सहूँ ऊढी ग्यारे ॥ ३३ ॥

लालचण्डेँ जसमा ने उश करघा उतयारे,  
 बल थी करधी मारे एने मुन आधीन,  
 एवो पापी निश्चय राजा ए मनमा कथारे ॥ ३४ ॥

अहिआ जसमा ए पण खात बधीपतिने करीरे,  
 कलियुग यासियो छे आ राजाना उरमाय,  
 धाव टकारे त रहेवू लानिम जरीनहीरे ॥ ३५ ॥

बीना ओढलोगो सह आघाते दुग्विया थयारे,  
 आध्या त मरेँनो राजा एपर रोश

मोटापरोडमा सहु पाटण छोडी निसर्यार ॥ ३६ ॥

राजा बीज दहाडे जसमा ने जीवा गयोरे,  
कीधु जसमा साटे असमानु दर्शन,  
एने मोवाग्नि नो जोर सर्गंग व्यापियोरे ॥ ३७ ॥

राजा दुर्वृद्धि थी जममानी पुठ पड्योरे,  
साथे सर्वे सजेला लीधा घाडेश्वार  
अधरचरस्ते राजा ओढो ने जाई अड्योर ॥ ३८ ॥

रुझा ओढो शुरा टेकी मालत्र देशनारे,  
दलका मन्त्र छता जातिनो अभिमान  
जसमा खातर मौ ए आख्या मरण आवशमारें ॥ ३९ ॥

आपणे जीवता राजा जसमा ने शु लईचशेरे,  
इज्जत जाता जीतर विकमल्यु गिणाय  
परहित मरता प्रभू स्वर्ग तणां सुख आपशेरें ॥ ४० ॥

जसमा अडग डभी रही राजा ने विनति करेरें,  
राजा रकचनोने सिन्सतापे आम  
हूंतो पुज्य भाव थी पितागणी ने ऊचर्ये ॥ ४१ ॥

राजा रक्तक थइ शीद भक्तक थाए अमतणोरे,  
नथी नथी घटतो नृप ने आवो अत्याचार ।  
तारी उज्वल कीर्ति जोतामां माग्नीथनेरे ॥ ४२ ॥

म्हारे तो राजा के महाराजा आ मारो पतिरें,

मालवान्तर्गत डूंगर प्रांत से थोड़े लोगों को बुलवाया गया था।  
उन्में 'टीकम' थोड़े और उसकी पत्नी जसमा छोड़ण भी थी।

जसमा युवति होने के साथ २ मुन्दरावृत्ति में थी। जिसके  
सालास की पाल पर मिट्टी ढाल कर आती हुई गुर्जर सम्राट्  
महाराजा सिद्धराज ने देखी। देखते ही उस पर मोहित होकर उसका  
अपन महलों में लीजा कर रानी बनाने के लिये महाराजा ने कई  
प्रकार में अनुनय करते हुए अनेक प्रलोभन दिये परन्तु जसमा उन  
प्रलोभनों में जरा भी न फसी सती का लबाब सुनकर महाराज  
को भी दग रह जाया पडा। जब कोई दूसरा उपाय शेष न रहा  
तो मला ने अपने नैतिक धर्म पर अडिग रहकर इन्द्रिय सयम  
और वीरता का परिचय दते हुये अपना वलिदान देकर समार  
के सामने स्त्री धर्म का उच्च आदर्श उपस्थित किया है।

जसमा का जीवन तो पवित्र था ही परन्तु उसमें इन्द्रिय  
सयम और मनोबल भी उच्च कोटि का था। क्योंकि महाराजा  
सिद्धराज ने उसे लुभाने के लिये रान पान, वस्त्राभूषण, गान  
तान, महल भन्दिर आदि पदार्थों का आसन्न्यण किया था।  
इतना ही नहीं अत्याग्रह भी किया था परन्तु वह अपना जीवन  
पवित्र धनाय रखने के लिये इन पदार्थों को विघ्न रूप समझती  
थी इसलिए उसने इन्हीं भोग्योपभोग्य पदार्थों को घ जगल क  
रहवाम को महत्व दिया जिनसे कि अपना जीवन पवित्र बना  
रह। आज उत्तम उत्तम घराने की स्त्रियां ने अपना रान पान  
रहन सहन इतना विनाश किया है कि यद्यपि व पवित्र जीवन

विताती हागी परन्तु लोक व्यवहार में उनका जीवन शका शील ही माना जायेगा ।

धर्म रक्षा व कर्त्तव्य पालन सादा वेष भूषा और सादगीपूर्ण रहन सहन से ही घटा आता है नखरे वाली पोशाक से नहीं । अब तो अनेक उच्चम जाति कुलकी अद्वनाए अपने खान पान, भोज शोक तथा पेशो आराम के पीछे अपने धर्म कर्म को ही भूल रही हैं । और अपनी जाति, समाज और देश को कलकित कर रही हैं । इतना ही नहीं मोका पड़ने पर कायरता का परिचय दफ्तर गड्डाओं की शिकार बन जाती हैं । जरामा विकट प्रसंग देखते ही वे खुद तो घबरावें ही पर छुट्टुम्ब के मनुष्यों को भी घबरा कर वन्दे हिम्मतहार बना देती हैं । उनके लिये जसमा का यह चरित्र बोध पाठ्यरूप धनेगा ।

जसमा महाराजा के डराने धमकाने पर भी लुभित होकर अपना आपा न भूली परन्तु द्रढता के साथ जैसा का तैसा जवाब दिया जिससे महाराजा भी आगे बढ़ने का साहस न कर सके और न बलात्कार ही । साथ ही साथ इस चरित्र में गुजरात के महामंत्री शान्तु महोता की विवेक शीलता, दूरदर्शिता, एवं प्रत्येक घात की सावधानी आश्चर्योत्पादक है । महाराजा के कृपा पात्र होने पर भी हाँ में हाँ न भिजाते हुए महाराजा के पने में फनी हुई जसमा को मुक्त कराने के लिये निर्भीकता पूर्ण सत्य सुना देना कम महत्व की घात नहीं है । ऐसे मंत्री जिस राज्य में हो वह राज्य, वह देश समार में उन्नत क्यों न हो ।

यद्यपि उस समय भारत में यवन, बादशाहों का प्रवेश हो चुका

था फिर भी भारत के लोग परतन्त्र आर पगधान नहीं बने थे व अपने दश व धर्म की रक्षा करने में कटिबद्ध थे। गुलाबों से बर कर जान बचा लेता पस" नहीं करते थे आपितु वीरता पूर्वक मुकाबला करके हमते २ प्राण दे दना अपना कर्तव्य मानते थे ।

'शान्तुमहता' सत्रिय नहीं अपितु यणिक० वीम का था और जैन धर्मी आयरु था आपार्य श्री दवचद्र सूरि का उपासक था वह नेनों समय प्रति ऋमण तथा धर्मारभन करता था और देश रक्षा के लिये प्रसंग उपरिबत होने पर शस्त्रों से मुसग्नित होकर युद्ध में भा उत्तर जाता था उत्तर में फारमीर तक जाकर जिसन तलवार बजाई थी और गुजरात को महागुजरात बनाने की चष्टा की थी ।

पेमे २ पुरुष व ऐसी २ लिये ही देश और धर्म की रक्षा कर सकते हैं जब थोड़ जैसी सामान्य हिन्दु जाति में भी इस प्रकार का धर्माभिमान था तां उम समय की भारतीय उच्च जातियो में धर्माभिमान और सत्व रक्षा किस सीमा तक पहुँची हुई होनी चाहिये यही विचारणीय है ।

अन्त मे भारत क मपूतों और सत्रारियों से आग्रह करता हूँ कि वे फैसन की फासी को फाटे और अपने धर्म की रक्षा के लिये इस आदर्श चरित्र को पढे और वे भाव अपने में भरे जिस मे अपने धर्म कर्म की रक्षा करने में समर्थ बनसके । इत्यलम् -लेखक

---

इसही वणीक से मतलब वणीया बजाक का नहीं परन्तु बाणिक का भय इरएक उरचनीच स्थिति में बना रहे उन्नति के समय भइकार में आकर फूले नहीं और अरन्नत में अधीर नहीं बने बड़ी सचचा बगिक है ।



भारतीय आदर्श नारी

अर्थात्

सती जसमा



सहस्रलिङ्ग कालिका



प्रथिव्यां त्रीणि रत्नानि, जलमन्न सुभाषितम् ।

मूढं पापाय खण्डेषु, रत्नसख्या विधियते ॥ १



विद्वानों ने इस पृथ्वी पर तीन प्रकार के पदार्थों को रत्न माने हैं यथा—जल, अन्न और सुभाषित (वाक्य) क्योंकि इनके द्वारा ससार का फलगाण हो सकता है, प्राण धारण किये जा सकते हैं, और जीवन आनन्दमय बनाया जा सकता है। परन्तु मूढ़ लोगों ने इन रत्नों को भूल कर पाषाण के टुकड़ों को ही यानी हीरा, पन्ना, माणिक आदि को ही रत्न सट्या दे रखी है। परन्तु ये रत्न तो जीवन को सुखी बनाने के बदले कई दफा महा दुखी बना देते हैं। पर जल अन्न और हितकर वचन का प्रयोग तो महा पुरुष भी करते हैं इसलिये पूर्वकाल के नृपति (राजा) प्रजा के कल्याणार्थ ऐसे स्थानों की अपने राज्य में सुविधा करते रहते थे जो इस प्रकरण में दिखाई देंगे।

कामजल्दी और फुर्ती से करो

निरीक्षक ने कहा।

जल्दी कैसे करें बापू ?

बेलदार बोला।

बुदाली के दो प्रहार ज्यादा मारो और दो टोकरी ज्यादा चठवाओ।

यदि ऐसा न हो तो ?

बेलदार ने प्रश्न किया

पैसे कट जावेंगे।

निरीक्षक ने रुखाई का प्रदर्शन किया।

हम दिन (दाहली) मजदूरी नहीं करते हैं बापू ? काम (उधड़ा) और ठेके में लिया है। बेलदार ने वास्तविकता को सामने रखी।

हां उधड़ा लिया इससे अपनी मरजी मूजिय करना क्या ? पेसा नहीं चलेगा, मजदूरी नहीं मिलेगी । मरीक्षक ने कहा ।

नहीं मिलेगी तो हम लोग खाएंगे क्या चापु ? पेसा, कहते कहते बेलदार ने कुदालीका एक प्रहार जमीन पर किया । मिट्टी का एक बड़ा ढेफा खलड़ा आया । उस पर आड़ी कुदाली मारने से ढेफा मिट्टी के रूप में परिणित हो गया और चारों ओर रजकण उठे ।

हॉ ! काम ऐसे होता है । तुम काम जल्दी करोगे तो पैसे भी जल्दी मिलेंगे और उतने ही मिलेंगे परन्तु खोदने वालों को इतनी बात सुनने का भी अवकाश कहा था और जरूरत भी क्या थी ।

बेलदार ने पास में मिट्टी का ढेर पड़ा हुआ देख कर बुम मारी अरे ! कहाँ गये सब ?

यह रही । पीछे से एक युवती की आवाज आयी । तूही इस तरह ढील करेगी तो दूसरे तो काम करेंगे ही कैसे ? बेलदार ओड ने कहा ।

छोकरा रोता हो तो उसे (हींचा) भूला भी न दू ? युवति ने शान्ति के साथ जवाब दिया ।

खोदने वाले ओड (बेलदार) के समक्ष युवति की उम्र आधी थी । दोनों के रूप और सौन्दर्य में जमीन आसमान जितना अंतर था । परन्तु दोनों का प्रेम घनिष्ठ था । दोनों परस्पर सतुष्ट थे । ओड ने कुदाली को एक हाथ में पकड़ कर एक हाथ युवति के कन्धे

सब साथ साथ ही आने थे। इससे काम स्यन्द्धापूर्वक करते थे किन्तु वेगारी की तरह नहीं। थोड़ा लोंगा का मरदार टोफम खुद भी काम करता था इससे दूसरे साथी लोग भी काम बिलगना कर अच्छी तरह करते थे।

### ग्रहण करने योग्य शिक्षा —

१—इस प्रकरण में यह सिखाया गया है कि सरकारी मुसरी लोग बचारे गरीब मजूर वर्ग पर अपना रोष गालिय करने के लिये किम प्रकार धोस और डाट डपट देते हैं तथा जाँची अनुपिन रीति से ठग करते हैं। २—पूर्व काल के महाराजा राज्य कोष की अपनी निजि सम्पत्ति नहीं माग कर धतौर ट्रस्टी के रक्षा करते थे तथा उसे प्रजा के हित में ही खर्च करते थे और इस तरह राजा एवं प्रजा का सम्बन्ध प्रतिदिन घनिष्ठ होकर एक दूसरे के सुख दुःख के संविभागी बनते थे। आज महीनों और वर्षों तक प्रजा को राजा लोंगा के दर्शन ही नहीं होते, न एक दूसरे के वास्तविक सुख दुःख को जान ही सकते। अपितु धर्मचारी लोग डलटी सुलगी कह कर राजा और प्रजा में किस प्रकार मनमुटाव कराते हैं। जहाँ राजा और प्रजा था सीधा सम्बन्ध है वहाँ दोनों तरफ का फुराल है और उसी राज्य की उन्नति है।





## पूर्व सृष्टि और मोह का उद्भव



मनुष्य तभी तक नीतिमान, धर्मपरायण और धर्मात्मा बना रहता है जब तक कि वह किसी सुन्दरावृत्ति वाली मनमोहनी स्त्री को नहीं देख पाता। परन्तु जब कभी ऐसी नव-यौवना सुन्दरी अचानक देखने में आ जाय और फिर भी उसके प्रति वह ध्यान नहीं दे, उसके लिये कवि कहता है कि,

पन्थास्तएव तरलायत लोचनानां ।

तारुण्यरूप पर्यर्षानपयोवराणाम् ॥

सामौदरापेरिलस त्रिवलीलतागाम्,

द्रष्ट्वा कृतिं विकृतिं मेति मनोने येपाम् ॥ १ ॥

( मगृह्णति श्रुताव द्रष्टव्यं )

भावार्थ—यह पुरुष वास्तव में धन्यवाद का पात्र है जो चंचल बंधे प्रजे नेत्रवाली, जीवन में मद-मस्त, दृढ़ एवं मुष्ट स्तनों वाली तथा जिसके दुबले बंध पतले उर पर त्रिवली लता शोभ रही है पंजी स्त्रियों की आकृति देखकर भी जिस पुरुष का मन विरक्त नहीं होता है। शेष तो इस प्रकार का आकर्षण सामने आते ही स्थित जाते हैं और अपने गौरव को भूल जाते हैं जो इस प्रकरण में ही दिखाई देगा।

बेहदार ! तुम खुद काम न करते हुए केवल ध्यान ही रखते रहो न ?  
निरीक्षक दुधमल ने कहा।

यदि ऐसा करने लगू तो ये मेरे हाड हराम के न हो जायें ?  
बेहदार ने शरणा उत्तर दिया।

दिन भर खड़ा रहना और दूसरों से काम लेना यह भी एक बात की मेहनत ही कहलाती है। दुधमल ने कहा। खड़ा रहना और बैठना यह तो आप लोगों की ही शोभे बापु ? हमारे तो कुदाली भली और घरती भली, पावड़ा भला और मिट्टी भली। दिन के समय घरती माता को घण घणाना और रात को उसी की गौदी

में आराम करना । मैं जब स्वयं काम नहीं करूँ और फेंकल हुकम ही चलाता रहूँ तो साथ वाले क्या काम करें ? जितना काम हम स्वयं करें उतना ही हमारे लाभ में है । ओड लोगों के मुत्तिये टीकम बेलदार ने जवाब दिया । दुधमल धायड़ा यात करता करता आगे बढ़ा कि उस की दृष्टि एक दम सामने की तरफ पड़ी । जिधर से महाराजा सिद्धराज मुजाल गहेता के साथ तालाब पर पधार रहे थे । महाराज को आते देख कर वह कुछ दूरी तक सामने गया और राजसी ठाठ से उमने महाराज का अभिवादन किया व एक तरफ खड़ा हो गया ।

महाराजा सिद्धराज ने सरोवर पर दृष्टि डाली तो अर्ध भाग मुद गया था ।

काम धराधर चलता है न ? महाराजा ने पूछा । जी । दुधमल ने अदब से जवाब दिया । अब कितने दिन और लगेगे ? महाराजा ने प्रश्न किया । ओड लोगों के नायक बेलदार को पृथ्वी दुधमल बोला । बलो, कह कर महाराजा आगे बढ़े । दुधमल महाराजा के पीछे पीछे हो लिया । दोनों ओड लोगों के नायक टीकम ओड जहा काम करता था, वहाँ आये । प्रात काल जैसी ही ताकत और ताजगी से सायकाल हो जाने पर भी काम हो रहा था । ओड लोगो की कुदालिये जमीन को भेद रही थी । उपरा उपरी प्रहारों से पृथ्वी धम धमा रही थी और उन ओड लोगों के शिशकारों के साथ ही मित्रों के डेके निकल आते थे । प्रस्वे के

विदुष्यों से उन ओढ़ लोगोंके घदन तरघतर हो रहे थे। ऊपरसे मिट्टी के रजकण उड़ उड़ कर उनके घदन को रग रहे थे। ओढ़ लोगों का झियें टोकरियें भर भर कर सरोवर की पाल पर व्यवस्थितरूप से ढाल रही थां कमी २ हास्यवश थोड़ी मिट्टी लेकर अपने पति पर उल्लास कर विनोद भी करती जाती थीं। इस प्रकार की मजूरी करते हुए भी आनन्दानुभव कर लेंते थे। जितना सुखी और निरिचत जीवन मजदूरी करनेवाले लोगों का होता है। उतना लाखों करोड़ों का धधा करने वाले श्रीमन्तों का भी नहीं होता। कारण वे रात दिन किसी न किसी चिन्ता में घिरे हो रहते हैं। समय पर न खाते, न पीते, न सोते, न आनन्द ही करते। रात को सोते हुए स्वप्न भी बेसे हो देखते रहते हैं। जैसी कि उनको कार्य की चिन्ता होती है। इसी से नीतिकार ने कहा है कि—

सन्तोषामृतवृत्ताना, यत्सुखशान्तिरेव च ॥

न च तद्धनलुब्धाना, मितर्चेतम्रधावताम् ॥

( चाणक्यनीतिदर्पण )

भावार्थ—सन्तोष रूपी अमृत का सेवन करने वालों को जो सुख और शान्ति का अनुभव होता है। वह धन के लोभियों को नहीं कारण वे इधर से उधर भटकत ही रहते हैं।

महाराजा को आते हुए देख कर उन ओढ़ लोगों ने भी कुदालियें उल्लासना बन्द कर दी और एक हाथ म कुदालियें थाम कर

दूसरे हाथ से महाराजा का अभियादन किया। महाराजा भी सबका मुजरा लेते हुए खड़े रहे।

अभी कितने दिन और लगेंगे ? महाराजा ने प्रश्न किया।

अब अधिक दिन नहीं लगेंगे परन्तु जितने दिन लगे हैं उतने तो लगेंगे ही। और जमीन को साफ तथा एकसी करने में कुछ दिन विशेष भी लगे। ओड़ों के नायक ने जवाब दिया।

नहर तरफ खुदाया ? महाराज ने दूसरा प्रश्न किया।  
नहीं बापु। यह तो सबसे पीछे लिया जायगा।

अच्छा—कह कर महाराजा आगे बढ़े। जाते समय सामने आती हुई एक युवति को देखी जिसके हाथ में खाली टोकरी थी और वह तालाब के किनारे पर से आ रही थी देखते ही महाराजा सिद्धराज धमके। धार धार उसको देख कर पहचान गये कि यह स्त्री वही है जिसको राजगढ़ की छत पर से उत रोज मैंने देखी थी। युवति ने अभी यौवन की सपाटी पर पैर रखा ही है अर्थात् विशोरावस्था पार करके पुरयौवनास्वथा को प्राप्त की है।

जब महाराजा सिद्धराज और राज्यमाता मीनलदेवी सोम नाथ महादेव की यात्रा से पधारे थे। तब प्रजाने बहुत ठाठ के साथ आपको नगर में प्रवेश कराया था। जगह जगह महाराजा को द्वार तोरादि अर्पण करके सत्कार किया था। यह ओड़ग भी उस रोज सवारी देखने के लिये राज्य दुर्ग की छत पर



चंद्र गइ थी और वहां से महाराजा को अर्घ्य अर्पित करने की सद्भावना से उसने भी महाराजा पर पुष्प वृष्टि की थी। उस समय महाराजा ने ऊपर दृष्टि फेंकते हुए इसे देखी थी वही स्मरना महाराजा को इस समय हो आया। अर्ध रात्रि युवति (ओडछी) नोकरी में मिट्टी भर कर उठा रही थी उस समय फिर दखी उस समय उसके देह के त्रिभगमें महाराजा को सौन्दर्य का अपूर्व आवि भाग दिखाई दिया। इस समय जो हाथ मिट्टी खूद रहे थे, इन्हा कोमल हाथों ने भेर पर पुष्प बपाये थे। अर्थात् जो हाथ कठिन थे, उनमें भी महाराजा को कोमलता दिखलाई दी। मिट्टी से भरा हुआ उसका शरीर होली खेलने के घाट मजोन्मत दिखाई दत हुये नवयौवनासा मोटक दिखाई देने लगा।

ओडछी (जसमा) मिट्टी डालने के लिये सरोवर के काठा तरफ चली तिमके साथ २ महाराजा का मन भी लिचता चला। दुधमल ? महाराजा ने पुकारा। जी, कह कर दुधमल आधा की प्रतीक्षा करने लगा। ओड लोगों के नायक को कहना कि काम जल्दी से करें यह फरमाकर महाराजा मुजाल महेता के साथ आगे बढ़े। खुदे हुए तालाब के चारों ओर चक्कर लगा कर देखा। परन्तु सब देखते हुए भी महाराजा की दृष्टि उस ओड युवति के प्रति लिच रहा थी। आखिर घूमते घूमते महाराजा और महेता दोनों एक बरगद के झाड़ के नीचे आकर खडे होगये।

ओडछी मिट्टी डालकर उसी झाड़ के नीचे आई जहां महा

राजा और मुजाल महेता खड़े थे। महाराजा और महेता को खड़े दरकर यह शर्मागई और पीछी फिरकर जहा ओड लोग खोद रहे थे वहां आकर बोली।

आज तो बालक ने मुझे बहुत हैरान किया नांद तो लेता ही नहीं। जाती या आती धार मृला दे आना। बच्चा ही तो ठहरा ओड बेलदार ने कहा। परन्तु महाराजा खड़े हैं। ओडण ने अपनी कठिनाई प्रदर्शित की। कहा? कह कर बेलदार न एडी उठाकर खड़े खड़े नजर टाली। महाराजा भाड नीचे खड़े थे और मुजाल तालाब के काठे खड़ा हुआ कुछ मालूम कर रहा था।

बच्चे ने अपने बाल स्वभावानुसार मोली में कुदाकुद की और रुदन करने लगा।

में, किस तरह बहा जाऊ। ओडण युवति न कहा। इसमें अपने को कैसी शर्म? ओडने जघाय दिया। लज्जा नहीं आये? लज्जा तो स्त्री का भूषण है न। तुम भी अजन आदमी हो—कह कर मिट्टी से भरी हुई टोकरी युवति ने माथे पर उठाई और तालाब के काठे ढालकर झाड़के नीचे रोते हुए बालक को भूला देने के वास्ते सबुचाती हुई आई।

आखिर हिम्मत करके आगे बढ़ी और बच्चे को भूला दंकर टोकरी हाथ में लेती हुई महाराजा की तरफ तिरछी नजर डाल पीछे लौट चली। आगे जाकर फिर एक नजर डाली। महाराजा वहा के वहा ही खड़े हुए टकटकी लगाये सय देय रहे थे।

## ग्रहण करने योग्य शिक्षा—

१—इस प्रकरण में टीकम ओड और दुधमल चावडा के सम्वाद में यह दिव्याया गया है कि उस जमाने के लोग काम करने में ही अपना महत्व मानते थे, खाली बैठे रहने और दूसरों के ऊपर हुकम चलाने में नहीं। इसी से उन लोगों के शरीर तन्दुरुस्त एवं बलवान होते थे। २—जीवन का जो आनन्द सामान्य मनुष्य ले सकते हैं वह श्रीमन्त और राजसी ठाठ वाले दम्पति नहीं ले सकते, कारण उनका जीवन अनेक कष्टों में फसा हुआ रहता है इसलिये समय पर जय दम्पति मिलते हैं तो उनमें विकार का प्रादुर्भाव शीघ्र हो जाता है किन्तु शुद्ध प्रेम का तो अभाव ना ही रहता है। ३—स्त्री का परिचय और स्मृति एक ऐसी बलाय है कि बड़े बड़े ऋषि मुनियों को भी अपने स्थान से गिरा देती है तो सामान्य मनुष्य का कहना ही क्या। इसीलिये ब्रह्मचारी को स्त्री परिचय सहवास और पूर्व स्मरण से सदा बचते रहना चाहिये अन्यथा उसका ब्रह्मचर्य खतरे में आ पड़ता है और कई साधु नाम धराकर पतित होगये हैं। ४—सज्जा सबुचाना और टेनी होकर चलना स्त्री के भूषण हैं पर ये ही क्रिया कामी के लिये शून्य है। भृद्दरि ने भी इसे प्रमाणित किया है।



# कर्त्तव्य पथ के साथ ही साथ लालस्य का प्रभाव



अधमायनमिच्छन्ति, धनमानचमभ्यसाः ॥

उत्तमामानामिच्छन्ति, मानोहिमहताधनम् ॥ १ ॥

( धाणस्य मोति दण )

भाषार्य—अधम जन धन को ही चाहते हैं । मध्यम जन धन और मान दोनों को चाहते हैं । परन्तु उत्तम जन हैं वे मान ही चाहते हैं क्योंकि मान ही उनका उत्कृष्ट धन है ।

जहाँ माता है, प्रतिष्ठा है वहाँ ये सब पुत्र्य देखते हैं परन्तु जहाँ प्रतिष्ठा की आपात पहुँचता हो, वहाँ ये न धन की परवाह करते हैं, न धन की ही किन्तु प्राणों की यानी लगाकर भी वे ससार में स्वप्रतिष्ठा की रक्षा करना चाहते हैं ।

महाराजा सिद्धराज, भी उन पुरुषों में से थे जो उत्तम जन में माने जाते हैं इसलिये वे मालव पति के उनकी सोमेश्वर की यात्रा गमन के समय किये हुए आक्रमण का महात्मात्म्य शान्तु महता ने ममयातुकूल समाधान किया। उसे भी अपनी प्रतिष्ठा में फलक मानकर उसे भू सने के लिये क्या करते हैं सो इस प्रकरण में दिखाई देगा ।

पाटण के अन्दर आज महाराजा सिद्धराज का दरबार भरा हुआ है । बड़े बड़े सरदार, योद्धा और मंत्री मडल विद्यमान हैं । वातावरण उम्र धन रहा है महाराजा के साथ ही साथ सब सभा सद्गुण जोरा में आय हुए हैं और किसी विशेष हुक्म की प्रतीक्षा कर रहे हैं केवल अन्तिम निर्णय होकर हुक्म होना ही शेष है ।

महाराजा सिद्धराज और राज्य माता मितलदेवी जिस समय सोमेश्वर की यात्रा की गयी थी । उस समय मौका देखकर मालव नरेश ने पाटण पर धावा बोल दिया था । बहुत सैन्यबल महाराजा के साथ गया हुआ था इसलिये पाटण में सैन्यबल बहुत ही कम रह गया था ।

महाऽमात्य शान्तुमहेता ने महाराजा की गैर मौजूदगी में इतने थल्प सरयक सैन्य से मालवपति के साथ युद्ध करने में प्रजा की कुशल न देखी। इसलिये हर्जाने की कुछ रकम देकर प्रजा को कष्ट से बचाने के लिये मालवपति से सन्धि करली थी। परन्तु यह सन्धि कर लेना और दण्ड की रकम देना महाराजा के हृदय में फट्टि की तरह चुना करती थी। अतः इस विषय में महाराजा ने आस पास के लोगों के परगलाने से महाऽमात्य महेताजी पर नाराज होकर महाऽमात्य पद ले लेने की चेष्टा की थी। परन्तु राज्य माता भिनल देवी ने बीच में पडकर वह मामला शान्त कर दिया था। तो भी मालवा पर घटाई करके बदलालेने की सर्व सम्मति से तय करके तैयारी की गई। लाव लरकर मालवा की तरफ रवाना कर दिया गया। महाराजा कल रहाने होंगे क्योंकि कितनेक गैर मौजूद सरदारों व प्रधान मन्त्रियों को बुलवाये गये और उन्हें महाराजा के साथ जाना होगा ऐसा तय हुवा था।

इधर पन्द्रह रोज हुए जब से महाराजा ने जसमा की तालाब पर देखी थी। महाराजा का चित्त हमेशा व्यग्र रहा करता था उन्हें जरा भी चैन नहीं पड़ता था। बात करते करते भी व्यग्र बन जाते थे। परन्तु सब कोई ये ही समझते थे कि मालव नरेश को जीतने की धुन सवार हो रही है। जिससे ये इतने व्यग्र बने हुए हैं। महाऽमात्य शान्तुमहेता और राज्यमाता भिनलदेवी भी रास

धाव को न जान सके। राज्य माता तो उलटी इसे पुत्र का उरसाह मान कर पुलकित हो उठती थी।

महाराजा को जब भी जसमा याद आती कि वे तालाब पर पधार जाते और उसे देखकर कोई न कोई चेष्टा करते ही रहते। इन पन्द्रह दिन में एक भी दिन ऐसा नहीं निकला होगा जिस रोज महाराजा सरोवर पर नहीं पधारे हों। सरोवर पर जाकर थोड़े सोगों से तथा उनके नायक से घातें करते तथा निस झाड़ के नीचे जसमा के घबे की झोली धन्धती थी, उसी झाड़ के नीचे जाकर विश्राम लेते थे। घबे को भूला देने आती जाती हुई उस थोड़ण युवती को देखा करते और मौका लगे तो घातचीत करने का भी प्रयत्न करते। पहले तो महाराजा तालाब पर पधारते, तब मंत्री मडल में से किसी न किसी को साथ लाते किन्तु धीरे-धीरे उन सोगों को साथ लाना भी बन्द कर दिया था। इतना ही नहीं, वहाँ काम की देखरेख करने वाले आबड़ और मुजाल महेता की भी नजर चुकाने का प्रयत्न करते रहते थे। पर उन चतुर मुसदियों ने धाव को भापली और मर्म को पहुँच गये। इसलिये वे खुद टाला ले लेते थे।

जब मनुष्य के हृदय में कामाग्नि प्रवेश कर जाती है, तब वह अपना मान भूल जाता है और अपनी प्रेयसी को प्राप्त करने की हर तरह चेष्टा करता है। परन्तु कोई तो बिना सोचे समझे एक धम धूद पड़ता है और कोई चतुराई से काम लेता है। वह शनै शनै

आगे बढ़ता है। महाराजा सिद्धराज भी चतुर थे। इससे उन्होंने युक्ति से काम लेना पसन्द किया था।

एक रोज महाराजा कुछ जल्दी आगये थे। यद्यपि मध्याह्न धीत चूका था परन्तु समय अभी बहुत बाकी था। धूप कढ़ाके की पड़ रही थी। दुधमल चावड़ा और महाराजा दोनों सरोवर के कांठे कांठे फिर रहे थे। काम रुकपसे चल रहा था। कुदालियों के प्रहार से धरती धणधणा रही थी। ओड लोगों की छियें मिट्टी की टोकरीयें भर भर कर सरोवर की पाल पर डाल रही थीं।

महाराजा को ऐसी धूप में पधारते हुए देखकर लोग आश्चर्या न्वित हुये। नजदीक पधारने पर ओड लोगों ने व ओटके नायक ने कुदाली को हाथ में ढाव कर महाराजा का अभिवादन किया। ओड सरदार बोला महाराज ! आज ऐसी तेज धूप में ?

वक्त मिले तब, आया जाय न ! महाराजा ने उत्तर दिया। सूर्य का ताप यद्यपि प्रखर था, परन्तु वह ओड लोगों को असह्य नहीं होताथा। पसीने पसीने होजाने पर भी उनका काम तो चालू ही था। फिरते फिरते महाराजा तालाब के कांठे आये और गर्मी से घबरा कर दुधमल से कहने लगे।

दुधमल—पानी चाहिये

महाराज—उम्मी को बुलवालों। दुधमल ने कहा। किसको ?

महाराजा ने प्रश्न किया।



वही थोड़ की ग्री जसमा को। दुःखमलने महाराजा से इंसते हुये कहा।

सुशामधिय लोग अपनी पूछ होन तथा स्वार्थ मापन के लिय अपने स्वामी को उन्नि अर्ज न करते हुए पतन के भाग में आगे रूढ़ान को गद्दगार हो जाते हैं। इतने में जसमा मिट्टी डालकर जाने लगी। उसको बुलवाकर दुधमन्नन महाराजा के लिये पानी लान को कहा।

जसमा जहां घन्ने की गोली बर्धी हुड था वहां आद। पनी दालियां व कारण भाइ के नीचे धूप नहीं थी। इगस वहां ठण्डक थी। जसमा ने गटकी म से ठहा पानी भरकर शरमाते हुए पानी का प्याला लाकर महाराजा क सामने खड़ी हुई। 'लेऊं' कह कर जसमा क हाथ म स पानी का प्याला लते हुए दुधमल की तरफ देगकर महाराजा न प्रश्न किया। जसमा चुप रही।

प्याल में से पानी पीते २, तुम्हारा ही नाम जसमा है ?  
महाराजा ने फिर बूसरा प्रश्न किया।

अपना नाम महाराजा के सु ड से सुन कर जसमा एक दम शरमा गई और लज्जा की रेखा उमके मुख पर पड़ते ही उसका सौन्दर्य अधिफ गिल उठा। जसमा ने महाराजा को तीन चार चार दसी भाड के नीचे देला था और एक बार बोलने का भी प्रमग नन आया था। इससे उसने रूफ में हा जवान दिया-

‘जी’ राजा पानी पी गया और फिर दूसरी बार मांगा ।

जसमा ! तू ऐसी फढ़ी धूप कैसे महती होगी ?

महाराजा ने प्रश्न किया ।

क्या करें, महाराज ! हमारे क्या राज्य है ! मजदूरी करते हैं और गुनारा चलाते हैं । जसमा ने पानी का पात्र दूसरी बार देते हुए नजर दूमरी तरफ रस्तकर जवाब दिया ।

परन्तु ऐसी धूप में ?

महाराजा ने फिर प्रश्न किया ।

नहीं तो कैसे पूरा पड़े ? बोलते घोलते देरी अधिक हो जाने से जसमा ने खोदाती हुई जमीन की तरफ नजर डाली और अपने पति को काम करता हुआ देखकर मोली में सोते हुये घालक को झूला देनी हुई वहाँ से चली गई ।

महाराजा देखते ही रह गये परन्तु महाराजा की इच्छा उसे प्राप्त करने के लिये बढने लगी ।

**ग्रहण करने योग्य शिक्षा:—**

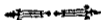
१—जिस मनुष्य के हृदय में किसी स्त्री को देखकर विकार प्रज्वलित हो उठता है उसे वही धुन लग जाती है कि इन्में मैं कैसे प्राप्त करूँ और अपनी प्रेयसी बनाऊँ उस लालसा के वेग में आकर वह अपना आपा तब भूल जाता है । अपनी एवं अपने पुर्यजों की इज्जत का जरा भी खयाल नहीं रखता हुआ ऐसे २

प्रपंच रचता है। ऐसा माया जाल फैलाता है जिसे समझना बड़ी ही कठिन समस्या है। २—इस फंद में फंसा हुआ मनुष्य अकृत्य एवं सभी कुकृत्य कर डालता है और अपना इहलोक परलोक दोनों त्रिगाड़ डालता है। इसीलिये शास्त्रकारों ने स्त्री ससर्ग से बचते रहने के लिये खूब सावधानी रखने का कहा है। ३—अपने माक्षिक को ऐसे चुगल में फंसे हुए देखकर आसपास के लोग उनका पतन करने में किस प्रकार मददगार हो जाते हैं। और किसी निर्दोष मनुष्य को कैसा फंसा देते हैं यह दुधमल की युक्ति से प्रकट है। ४—कामी लोग स्त्री के आगे कैसे नम्र होकर प्रेम दर्शाते हैं और उसे अपनी तरफ आकृष्ट करने के लिये कैसी युक्ति से काम लेते हैं यह भी इसमें बताया गया है।





## प्रलोभन



निरखिनेनवयौवना, नेहन आयेलगार ॥

गणैकाष्टकीपुतली, ते भगवान समान ॥१॥

(श्रीमद्वराहखण्ड के उद्गार)

वे मनुष्य वास्तव में पूज्य हैं जो साक्षात् काम स्वरूपा, सौन्दर्य मूर्ति, नव यौवना स्त्री को देखकर भी विचलित नहीं होते किन्तु अपने निज स्वरूप में ही स्थित रहते हैं। उनको कवि ने तो भगवान की उपमा देदी है। किन्तु विचार करते हुए यह उपमा अतिशयोक्ति नहीं है क्योंकि इन्द्र चन्द्र नागेन्द्र और नरेन्द्र भी

जिसकी आँखें दृशार पर टाघत रहने हैं उन मनोहरा खी को देखकर जो सुख नहीं होते। घं मनुष्य तो क्या देवों के भी पूज्य हैं ऐसे महापुरुष तो बहुत ही कम हैं। तारा मंतार ही इमने पदे में फंस कर उसे अपना आधीन करन के लिये आवाश पाताल एक कर डालते हैं और अचित अचुचित सभी उपाय काम में लेते हैं। न धोले जैमे वचन भी बोलते हैं और श्री के दास होकर रहना भी स्वीकार करते हुए नहीं मनुष्याते। गुर्नर सम्राट महाराजा सिद्धराज भी एक मन्तूरीय सौन्दर्य पर मुग्ध हुए क्या र चेष्टा करत हैं सो दिखाया जाता है।

जत्र से महाराजा ने जसमा को सरोवर पर काम करती हुई देखी है और उसक हाथ से पानी पीकर यातचीत की है। उसके बाद तो प्रति दिन सरोवर पर जाना और प्रसंग पाकर यातचीत करके उसे अपनाता महाराजा सिद्धराज का ध्येय बन चुका था। इससे धे टाहम धे टाहम जत्र मरची हो तभी सरोवर पर पहुँच जाते थे। एक दिन फिर सरोवर की पाल पर खड़े हुये महाराजा को विचार मग्न देख कर दुधमछ ने कहा—

क्यों महाराज ?

क्यों क्या ?

क्या विचार करते थे ?

महाराजा ने कहा।

दुधमछ ने पूछा।

हुज नहीं। जिस रोज से महाराजा ने पानी पिया था। दुधमछ के साथ निकट मैत्री सी होगई थी। आज प्रात काल ही महा-

राज सरोवर पर पधार गए थे । सुदाई का काम पूरी तेजी से चल रहा था । आज सरोवर पर टधर उधर नहीं फिरते हुए उसी झाड़ के नीचे खड़े होगये थे । जहा धन्धे की भोली बन्धी हुई थी दुधमल भी खडा खडा घातें कर रहा था । जसमा को भूला देने के लिये आती हुई देस कर दुधमल जरा दूर हट गया । सकुचाती हुई जसमा भूला देकर खाना हुआ । पीछे से धीमी आवाज आई जसमा । जसमा ने रुककर पीछे देखा तो महाराजा थे । जसमा स्थिर खड़ी रही । फिर आवाज आई जसमा । वह फिर भी चुपचाप खड़ी ही रहीं ।

जसमा ! ऐसी मेहनत करने के लिये तेरा सर्जन हुआ हो यह मैं नहीं मानता । फिर क्यों तू इस तरह अपना जीवन बर्बाद कर रही है ।

महाराजा ने बात जाने बदाई ।

क्या करें, महाराज ! हमारा धन्धा ही ऐसा है । जसमा ने खीरे से सकुचाते हुए महाराजा को उत्तर दिया ।

मैं तुम्हारे लिये यह सुविधा किये देता हूँ कि तुम आज से तालाब की पाल पर बैठी हुई अपने बच्चे का पालन किया करो । मिट्टी मत उठाया करो । मिट्टी उठाने वाली तो बहुत हैं महाराजा ने अपना प्रस्ताव रक्खा ।

आप मालिक हैं । इसलिये ऐसी कृपा दशति हैं । परन्तु मैं बिना मेहनत किये हराम का खाना नहीं चाहती । मेहनत करना मैं अच्छा समझती हूँ । मेरा स्वभाव दूसरी ही तरह का है ।

जसमा ने बहुत भरब के साथ उत्तर दिया ।

बसमा ! तेरा शरीर मुठुमारवा का पर है। इससे मिट्टी उठाना सुवर्ण के थाल में धूल भरने जैसा है। इसकी कदर धो कोई कदरदाग ही कर सकता है। सब फोड़ नहीं कर सकते। तू मिट्टी दोकर इसका नारा मत कर। महाराज ने प्रेम प्रदर्शित करते हुए कहा।

महाराज ! बिना मदेनव किये बैठे बैठे राने से कई प्रकार के रोग होजाते हैं। मुझे भी कोई रोग हो जाये और डाक्टर लोग फीस मार्गे तो हम मजदूर लोग कहां से लावें ? हम मजदूरों के पास धन कहां है।

हिस्ट्रीया का रोग जिसे पुराणीस्त्रियें भेड़ा चढ़ा कहती हैं और जिसके होजाने पर अक्सर देवी देवताओं पीरों के स्थान पर ले जाना पड़ता है यह प्रायः परिभ्रम न करते द्रुये बैठे बैठे स्थाने से ही हो जाता है। यह रोग जितना गरीब स्त्रियों को नहीं होता, उतना धनधान स्त्रियों को अधिक होता है। जहाँ थालस्य है परिभ्रम नहीं किया जाता वहाँ यह रोग जल्दी लागू होता है फिर डाक्टरों की हाजरी और देवी देवताओं की मिन्नतें करना पड़ती हैं। महाराज ! मैं ऐसा करना नहीं चाहती। मरा काम अच्छी तरह चल रहा है परिभ्रम करने से मेरा शरीर स्वस्थ रहता है आप फिकर न करें।

बसमा ने महाराज से कहा।

जसमा ! मैं फिर भी कहता हूँ कि तू जगल में घसने के लिये

नहीं है। देख तो यह तेरा सुकोमल बदन जगलों में भटकने के का बिल नहीं है। चल मेरे शहर में, पाटण शहर इस समय बिलकुल स्वर्ग बन रहा है तुझे शहर में अच्छी जगह रहने को दिला दूंगा।

कृपा भाव दशाते हुए महाराज ने कहा।

जसमा समझ गई कि राजा का पहला दाव न चलने से दूसरा पासा फेंका और मुझे लोभ दे रहा है।

महाराज कहा तो यह आनन्ददायक जगल और कहा गन्दा नगर ? जिस प्रकार गर्मी के मारे कीड़े मकोड़े भूमि में से निकल कर रेंगते हैं उसी प्रकार शहरों के तंग मार्ग में मनुष्य फिरते हैं। बड़ा अच्छी तरह चलने को मार्ग भी पूरा नहीं मिलता और जगल में तो सदा ही मगल है। ऐसी शुद्ध स्वच्छ वायु और विस्तृत स्थान शहरों में कहाँ है ?

जसमा ने उत्तर दिया।

राजा सोचने लगा कि यह तो हम फाँसे में भी नहीं फँसी अब क्या करना चाहिये। तुरन्त ही बात धरने के ढग को बदल कर महाराजा ने कहा।

जसमा ! तेरी बुद्धि बिगड़ी हुई है। गिबारों को गिबारपना ही अच्छा लगता है। इसी से तू ऐसी बातें कर रही है। अधिक मनुष्यों के बीच में रहना बड़े भाग्य से ही मिलता है। शहरों का वास देषवास होने से बड़ा ही अच्छा है। तू हलके भाग की ठहरी। खाँखरे की स्त्री-कोली ( घाती ) का ल मिनी —



क्या जाने । इसी तरह तू जगल की रहने वाली शहरों के मने को क्या समझे, चल में तुम्हें शहर में रहने के लिये अच्छा स्थान दूंगा । महाराजा ने डाट डपट कर फिर लालच दिनाया ।

चादमेरी ढिंढाई या गिबारपा समझे । मधी बात तो यह है कि आपको जैसा नगर प्रिय है वैसा मुझे जगल प्रिय है । शहरों के आत्मी जैसे मैले मन के होते हैं वैसे जगल के रहने वाले नहीं ।

घड़े २ शहर आज पाप के किले बन रहे हैं । बोर, जुझारी, व्यभिचारी, नशीवान, भगेडी, गनेडी आदि सभी तरह के विकार मनुष्य शहरों में ही होते हैं । शहरों के बहुत से लोग तो सत्संग में ( धर्म स्थान में ) भी विचारों से भरे हुए घाते हैं और अपन विकार पोषण करते हैं । देहातों में ये घातें अधिकांश नहीं होती यह सोना चांदी का जेवर भी किसी का पड़ा रह जावे तो देहाती लोग उसके मालिक को दूधकर उसे पहुँचाने की चेष्टा करेंगे । यह बात शहरों में नहीं है । शहरों में तो छोटी से छोटी वस्तु के लिये भी परस्पर हत्या करने की नहीं चूकते हैं तथा शहरों में रोग भी अधिक होते हैं । इस लिये डाक्टर लोग उन्हें शहर से बाहर जगल में रहने की सलाह देते हैं । जसमा ने निर्भिकता से उत्तर दिया ।

परन्तु तेरा रूप और सौन्दर्य तो महलों को शोभायें ऐसा है ।

महाराजा ने उसे छलचाने के लिये कहा ।

जसमा अभी तक जहाँ की तहाँ खड़ी थी । प्रातः काम का समय होने पर भी मिहनत और परिश्रम से प्रसरेद के बिन्दु कलाट पर

गोतियों की दमक दे रहे थे। अपनी साड़ी के पल्ले से ललाट को पोंछती हुई उमने राजा की तरफ देखा। परन्तु महाराज को अपने इस प्रश्न का कुछ भी प्रत्युर न मिलने से उन्होंने तुरन्त ही बात को बदल दी।

तेरा पति कहा है ? जिस पर तू इतना गर्म कर रही है, मैं भी तो उसे देखू वह कैसा है।

वह जो कमर बस कर काम कर रहा है और जिस के शिर पर फल का गुच्छा है। जगछी के इशारे स जसमा ने बताया।

क्या तालान में ही है ?

महाराज ने पूछा।

हाँ। कहकर जसमा भूने की तरफ गई और वधे को भूला देकर अपने काम में लगने के लिये चली परन्तु पीछे स ओढ़णी का पल्ला रेंवा गया—

महाराज यह क्या ? पीछे से महाराज न पल्ला पकड़ रखा था जिसे देख कर जसमा बोली।

क्या वही तेरा पति है। कहाँ तू और कहाँ वह कौण के गले में रत्नों की माला ? उस मिट्टी खोदने वाले क पीछे इतनी इतरा रही है ? और मेरा निरादर कर रही है। हंसनी कौण के पास नहीं शोभती। इसलिये हंसनी को कौण के पास रहने देना ठीक नहीं है। तू महल को बल। तू तो महलों में ही शोभेगी। दर दर ऊपर तेरे पति को विश्वास ही नहीं है। वह तेरी तरफ टेढ़ा -

उसका देखो का दग ही यह स्पष्ट पतला रहा है कि तेरे पर न  
 वो उसका विश्वास ही है न प्रेम ही । ऐसा आदमी तेरी क्या कर  
 जाने ? मेरे अविश्वासी पति के पास रहना क्या तुम्हें उचित है ?

टीकम श्रोत्र ने उस समय राणा की तरफ इसलिये देखा था कि  
 गरी पत्नी से क्या बातें कर रहे हैं ?

महाराज ! सधे को समार में जरा भी भय नहीं है । मेरे पति  
 का मेरे प्रति पूर्ण विश्वास है । मैं अपने पति के सिवाय अन्य  
 पुरुषों को भाई मानती हूँ । यह अविश्वास तो आप लोगों में होता  
 है । हमारे में तो आज तक ही अविश्वास का काम नहीं । मेरे मन  
 में यदि पति के प्रति अविश्वास हो तो पति को मेरे प्रति अविश्वास  
 हो । मेरा पति मुझे नहीं देख रहा है । परन्तु आपकी बिगड़ी  
 हुई दृष्टि को । जसमा ने वैसा ही निर्भीकता से उत्तर दिया ।

जसमा । तू मिट्टी उठा उठा कर डाले यह मुझ से देखा नहीं  
 जाता । तेरे पैसी नाजुक स्त्री इस तरह अपने मानव देह का हास करे  
 यह मुझे असह्य हो रहा है । इसलिये तू मेरे महलों में चल । उफ्टी  
 सुस्ती बातें छोड़ कर महाराज ने मुझे की बात बही । गुर्जर समाट  
 को इस तरह बातें करते हुये देख कर जसमा से न रहा गया ।  
 यद्यपि सिद्ध राज एक बड़ा राजा था परन्तु जसमा को इससे  
 भी अपना स्वमान अधिक अभीष्ट था । इसलिये राजा के कथन  
 को परवाह न करते हुए जसमा ने कहा

महाराज ! हम तो मजदूर हैं। मिट्टी उठाये बिना काम कैसे चले। परन्तु आपके महलों में रानियों की क्या कमी है ?

परन्तु तू एक धार महल तो देख आ। महाराज ने कहा। महाराज ! पाटण के महलों में रहने की अपेक्षा में अपने गरीबी मोपड़े को किसी तरह कम नहीं समझती हूँ। राजा की रानी होने के बदले एक प्रामीण ओड की स्त्री कहलाना मुझे अधिक पसन्द है।

जसमा ने स्पष्ट उत्तर दिया।

किन्तु तेरे रूप और हुस्न के पास, ।

महाराज भागे खोचना ही चाहते थे। इतने में ही जसमा ने कहा।

महाराज ! यह बात जाने दो। मेरे रूप की आपने कदर की तो भले ही की। परन्तु यह शरीर तो भीपड़ी में ही रहने को है। अब मुझे जाने दीजिये। आप राजा हैं, मैं रैयत हूँ। गुजरात के महाराजा होकर आपको ऐसा काम और ऐसी याचना करना नहीं शोभती। जरा सयाल रसिये।

मैं कहता हूँ उसे भान इतने में ही जसमा महाराज के बीच में ही घोल डठी।

आज आपने मेरे साथ ऐसी बात की। कल आपकी नजर दुसरी तरफ ढलेगी। यही गती रही तो पाटण के नरेश पर कौन विश्वास करेगा। इसलिये यहाँ से पधारिये और महलों में रहकर आपकी रानी को ही आपके महल के सुख और वैभव दीजिये।

गुजरात के अन्दर ऐसा भी राजा लोग होते हैं इसकी ग्यवर आप ही पड़ी। यह कहने के साथ ही पत्नी छुड़ाकर जसमा एक दम आगे पड़ी। पिछाही घघा भौली गँरो रहा था। उसकी भी सुनाई नहा की। जाती हुई जसमा की राजा देवता ही रह गया पर एक शब्द भी उसके मुँह से नहीं निकला।

मिथी से प्लावित माझी ने अन्दर दृष्टा हुआ उमका गौर वर्ण सूर्य की किरणों की पीछे हटा कर अजब दमक दे रहा था। उसकी चाल (यद्यपि वह जमीन खोदने वाली जाति की थी किन्तु) इतनी मृदु थी कि कहीं चलते हुए धरती माता को किसी प्रकार कष्ट न होन पावे। महाराजा उसकी चाल को देखते ही रह गये और अपने मन ही मन में उसकी प्रशंसा करने लगे।

महाराजा भाप यहाँ कहीं से। माझ के पीछे से आवाज आई।

महाराज सिद्धराज ने पीछे फिरकर देखा तो पूछने वाला आश्चर्य था। यह भी महाराज के मंत्रीमहल में का एक सभासद था तथा प्रधान मंत्री शान्तु महेता का खास विश्वासपात्र था।

आश्चर्य ! तू यहाँ कहीं से ? महाराजा ने प्रश्न किया

महाराज ! मैं तो दिन में दो तीन बार काम देखने को आया करता हूँ। ऐसा बोलते हुए आम्बड की नजर आझ की हाथी के नीचे लटकती हुई भौली की तरफ और वहा से तिसक कर जाती हुई श्रीदण युवती की तरफ गई और उसके हृदय में एक प्रश्न पैदा हुआ कि, क्या महाराजा इससे मिलाने के लिये यहाँ आते हैं ?

## ग्रहण करने योग्य शिक्षा—

१ इस प्रकरण में दिखाया गया है कि जो मनुष्य कामान्ध हो जाता है वह यह नहीं सोचता कि मैं कौन हूँ। किस कुल में उत्पन्न हुआ हूँ। मेरी व मेरे ज्ञान दान की कैसी प्रतिष्ठा है और मैं यह क्या कर रहा हूँ। मैंने जब विवाह किया था तब मेरी पत्नी को मैंने क्या-२ अधिकार दिये थे। उसे क्या-२ विश्वास दिया था और अब उसका हक उसका अधिकार दूसरी को देने का मुझे क्या हक है।

२ वह उचित और अनुचित रीति से उसे लालच विश्वास देकर अपनी तरफ रजू करने की पूरी चेष्टा करता है। हर तरह लाचारी और आजीजी भी करता है परन्तु जो चतुर स्त्री होती है वह उसके दम्भ (गंभासे) में नहीं आती और अपने शील धर्म एवं पतिव्रत धर्म को ही आदर्श मान कर उन लालच भरे वचनों को ठुकरा देती है। किन्तु जो मूर्ख स्त्रियें होती हैं वे दम्भ में आकर भ्रष्ट हो जाती हैं, वे न घर की रहती न घाट की।





५

## सखिर्षो का विनोद

संसार के अन्दर मनुष्य को अपने हृदय का भार हलका  
और असमंजस में पड़े हुए को मार्ग का प्रदर्शन करने के  
। यदि कोई स्थान है तो वह केवल मित्र ही है। मित्र ही  
। प रूप गर्मी से सूखते हुए हृदय रूपी बगीचे को सिंचन करने  
। राम सहायक है। कहते हैं कि—

पापाभिवारयति योजयते हिताय,  
गुक्षयगुहतिगुणान् प्रकटीकरोति ॥  
आपद्गतञ्च न जहाति ददातिकाले,  
सन्भिन्नलक्षणाभिद प्रवदन्ति सन्तः ॥ १ ॥

(मनुहरिनीति शतक)

भावार्थ—पाप करते हुए को रोके और उमके हित का उपदेश करे, गुप्त बात को छिपावे और गुणों को प्रकट करे, आपत्ति काल में साथ न छोड़े और समय पडने पर यथा शक्ति द्रव्यादि से सहायता करे। इस प्रकार संत पुरुषों ने उत्तम मित्रों के ये लक्षण बताये हैं। जसमा भी अपनी सत्ति के यहाँ जाकर किस प्रकार बातचीत करके अपना हृदय खाली करती है सो दिखाया जाता है।

रम्भा बहन !

जसमा ने नीचे से भावाज दी।

कौन !

ऊपर से भावाज आयी।

यह तो मैं हूँ।

जसमा ने अपनी पहचान कराई।

रम्भा ने नीचे उतर कर क़ियाड़ खोले और आगन्तुक को पहचान कर कौन ! जसमा बहन ?

हाँ ! बहन !

जसमा ने कहा।

इस समय कैसे !

रम्भा ने आने का कारण पूछा।

लो, क्या मिलने को भी न आऊँ ? पाँच दिन पहले मिल गई थी। आज फिर तबीयत हुई कि मिल आऊँ। जसमा ने जवाब दिया।

आओ बहन ! कहकर रम्भा जसमा को अपने कमरे में ले गई।

जसमा और रम्भा यद्यपि बहनें तो नहीं थी परन्तु जसमा के पाटण आने के बाद इन दोनों की परस्पर घनिष्ठता बढ़ गई थी। दोनों ही एक गोदले में रहती थी। नजदीक होने से आने



को मुगमता थी। जसमा रम्भा के यहाँ कई पार आती थीर मुग्ग दुग्ग की प्रेम भरी घाँवें कर जाती थी। इन गीतों में गाठ सम्बन्ध होना का यह भी कारण था कि श्री आंध्र भाई लालाय की देव देव करने को दिन में दो तीन पार आते जाते थे और रम्भा इनकी पत्नी होना वाली थी। इनका सम्बन्ध हो गया था। रम्भा के द्वारा कई घाँवें जसमा को राग्य प्रपञ्च की जात को मिलती थी। रम्भा और जसमा दोनों मिलनगार, व हंस मुग्ग थी। इस कारण इनकी प्रीति प्रतिदिन बढ़ती ही जाती थी। फोर्ड बोर्ड वर धाता के रग में बढ़ती वध-गण दूसरी की हंसी मसगरी भी कर लेती थी।

इन दोनों आंध्र भाई लालाय पर नहीं पधारते? जसमाने पूछा।  
गये होत फोर्ड गरि मारने को। रम्भा न ताक निकोड़ते हुए कहा।

मातृम होता है कि तुमन भी प्तको नहीं देगा दे? और  
जाके जाने की खबर तुम्ह भी नहीं है। जसमा ने रम्भा की बात  
में से सार भाग खींच कर सामा रगा।

क्या ममी हर रोज देरती ही रहती होगी? रम्भा ने कहा।  
बहन, मैं तो हर रोज ही देरती व सेवा करती रहती हूँ।  
जसमा ने कहा।

तुम लोगों का घात जूदी है। रम्भा न जवाब दिया।  
हाँ। मेरा तो लग्न भी हो गया है। जसमा ने कहा।  
और पुत्र की माता भी तो हो चुकी हो।

रम्भा ने हसते हुए कहा।

लो, इममें क्या ? यह तो मंसार की रीति है जममा ने हास्य को रोकत हुए कहा ।

मैं तो अर देश में जाने का विचार कर रही हूँ ।

जममा ने बात की शुद्धभात की ।

तुम या तुम्हारे घर वाले ? रममा ने ध्यत में पूछा ।

मैं और ये क्या अलग २ हैं । जसमा ने सवाव रिमा ।

सरोवर पूरा खुद चुका ? रममा ने प्रदा किया ।

नहीं । जसमा ने उत्तर दिया ।

तब ? रममा ने फिर प्रदन किया ।

अधूरा छोड़ कर ही जावेंगे । जसमा ने कहा ।

काम पूरा करने से पहले राज्य मजूरी दे देवेगा ?

नहीं देवे तो कुछ परवाह नहीं हमतो मजदूर हैं । और कहीं मजदूरी करेंगे । ऐसे अनीति के पैसे नहीं चाहिये । जसमा मूल बात पर आई ।

अनीति, कित्त बात की बहन ! रममा को इसका रहस्य मालूम नहीं पड़ा इमलिये प्ररन किया ।

दूसरा क्या बहन ! अब यह घरती ( भूमि ) भारी पड़ती जाती है और मेरी जन्मभूमि आवाज दे रही है कि, आती रह, मालवा में । जसमा ने व्यंग में कहा ।

परन्तु क्या बात हुई, यह तो कह । रममा ने उत्सुकता प्रकट की ।

हुई क्या ? मन उच गया ? जसमा ने बात को छिपाते हुए कहा ।

पर कुछ कारण तो होगा ?

रम्मा ने कारण बानने की भातुरता प्रकट की ।  
कारण ? कारण क्या कहूँ बहन कहते हुए जवान नहीं उठती ।

असमा ने ठही भाइ भाते हुये कहा ।

आगिर कुछ कहोगी भी नाम ठाम भी बधाओगी ।

रम्मा ने शांखना दिखाते हुए वस्तुकता दर्शाई ।

बहन क्या कहूँ—गुद महाराजा सिद्धराज गुजरसम्राट की  
मेरे पर नियम बिगड़ी हुई है ।

असमा ने धीरे से वास्तविशता का आभास कराया ।

क्या कहती हो बहन ? रम्मा सुनकर स्तब्ध होगई ।

सच्ची बात है बहन ? असमा ने विप्रवास दिखाते हुए कहा ।

तुम्हारे पतिदेव इस बात को जानते हैं । रम्मा ने प्रश्न किया ।

नहीं, मैंने अभी उनके आगे बात नहीं की है यदि कहूँ तो धाव  
बिगड़ जावे और परिणाम न जाने क्या हो ।

असमा ने गम्भीरता से कहा ।

परन्तु अपन महाराजा के सामने ही नहीं देखें तो ?

रम्मा ने प्रश्न किया ।

अपन नहीं देखें परन्तु महाराजा देखें इसका क्या उपाय ।  
और राजा है रुठे या तूठे । रुठे तो पायमाल हो जायें यह तो  
जाहिरा बात है । बहन ! असमा ने भविष्य विचार कर कहा ।

तुम्हारा भाइ आवेगा तब मैं उनके आगे बात छेड़ कर  
पूछूगी । रम्मा ने आश्रय के भावत में कहा ।

नहीं ! नहीं ! उनको क्या कहना । नकी हुआ तो कल ही रवाना हो जायेंगे ।  
जसमा ने कहा ।

ऐसी क्या जल्दी है ? अभी तो डरने जैसी कोई बात नहीं है ।  
रग्मा ने कहा ।

क्यों घहन ?  
जसमाने षसुकुठा से पूछा ।

कल प्रातःकाल ही महाराजा मालवा पर चढाई करने जा रहे हैं ।  
रग्मा ने कहा ।

पीछे क्या आवेंगे ?  
जसमा ने आतुरता से पूछा ।

विजय मिलेगी तब । कम से कम दो महीना तो लगेगा ही ।  
वहा तक क्या तालाब की खुदाई का काम पूरा नहीं हो सकता ?  
रग्मा ने पूछा ।

जल्दी करें तो डेढ़ महीने में भी हो सकता है ।

जसमा ने कहा ।

फिर की हुई मेहनत के ऊपर पानी क्यों फेरती हो । परन्तु महाराजा ऐसे दिखते तो नहीं हैं ।

रग्मा ने फिर बात को स्पष्ट करने के लिये टोपी ।

यही बात है न उहन । किसी को कहें तो अपने को ही भूटा मानें । समार में तो प्रतिष्ठा एक बड़ी वस्तु है । इसलिए उनके लिये सामान्य मनुष्य सखी बात करे तो भी कोई नहीं मानता है । यह दुनिया का स्वभाव ही है ।  
जसमा ने कहा ।



## दूरदर्शिता एवं हितशिक्षा



पद्माकर दिगकरो विकची करोति,  
चन्द्रोविकाशयति कैरवचक्रबालम् ॥  
नाभ्यऽर्थितो जलधरोपि जलददाति,  
सन्तःस्वय परहिते सुकृताभियोगाः ॥ १ ॥

( मर्तुहरि नीतिशतक )

भावार्थ—सूर्य्य बिना यांचे ही स्वतः कमल फे समूह को विकसित करता है । चन्द्रमा बिना यांचे । कुमुदिनी फो प्रफुल्लित करता है और मेघ त्रिना यांचे ही उता । ऐसे ही सन्तजन बिना यांचे ही पराये हित फे लिये स्व उद्योग करेते हैं ।

यद्यपि स्वार्थ में अन्धा मनुष्य उपकारी का भी अपकार करने की चेष्टा करता है। परन्तु उत्तम जन उस अपकार को भूलकर अपकार करने वाले का भी हित ही करते हैं और उसे नेक सलाह ही देते हैं, जो इस प्रकरण में दिखाई देगा।

लगभग एक महिने से महाराजा सिद्धराज उज्जैन को चारों तरफ से घेरे हुये हैं। परन्तु शत्रु लोग जरा भी दाद नहीं देते। इधर पाटण में तद्वस्त्रलिंग तालाब का काम पूरा होने आया। रात दिन काम चलाया जाता था और पन्द्रह दिन में तो काम पूरा करके मेहनताना औद लोगों को चुका दिया जायगा। ऐसे आसार दिखाई देते थे।

मुजाल महता को महाराजा सिद्धराज ने अपने पास मालवे बुलवाया।

मुजाल शान्तु महता के पास रहकर हरएक राज्यकीय कार्य में कुशल घन गया था, परन्तु महाऽमात्य शान्तु महता जितनी दूरदर्शिता इसमें नहीं आई थी। तो भी महामात्य घनने को उत्सुक था और किसी न किसी प्रसंग की खोज में था। उसने मालवा जाने से पहले सरोवर पर आकर घड़ा की देख भाल की और दूधमल को बुलवा कर पूछा।

दूधमल ? क्या समाचार है।

तालाब का काम पूरा होने को है। दूधमल ने जवाब दिया।

बहुत तेजी से काम हुआ है। क्यों ? मुजाल ने बात स्पष्ट करने को

दां, देखो न । अभी क्या स्वायम्भू की कि महामात्यजी ने रात  
रात काम खोज कर काम पूरा करने का परमाज्ञा निदास दिया  
परन्तु मैं क्या कहा अममजम और सुरिकल में था पड़ा हूँ ।

दुष्मल ने कहा ।

क्या ?

मुझसे पूछा ।

महाराजा पधारत समय मुझे परमाज्ञा दी कि मेरी आत्मा  
बिना ओट लोहा को पगार मत चुकाना । यह बात मैं महाऽमा  
त्यजी को किस तरह कहूँ— दुष्मल ने अपनी कठिनता स्पष्ट की ।

महाराजा किम क्रियं प्रेता परमाज्ञा गये हैं ?

मुझसे बात का मर्म जानने का पूछा ।

यह तो मुझे क्या मरपर ?

दुष्मल ने कहा ।

तब आज कार्यकाल को मैं मालये जाता हूँ । महाराजा की  
दुष्ट अज्ञा करानी है ।

मुझसे मेहता ने कहा ।

क्या कहना है । महाराजा खुद आकर काम तपास लें ।

दुष्मल ने कहा ।

परन्तु हममें तो भयम चाहिये ।

मुझसे मरण किया ।

अभी पन्द्रह दिन का अवकाश है तो भी मेरा सन्देश तो  
महाराजा को पहुँचा देना । आगे उनकी इच्छा । दुष्मल ने कहा ।

अच्छा । मैं महाऽमात्य मेहताजी को भी कहूँगा । प्रेता कह  
कर मुत्तान बहों से रखाने हुआ और दुपहर के समय यह महाऽ  
मात्य की हवेली आया । महाऽमात्यजी उस समय सोये हुए थे ।

युक्ति पूर्वक उनको जगा कर के सुखधानी में ही बैठ गया ?

आज सायकाल को जाना है न ? महाऽमात्य ने पूछा ।

जी । ' ' ' ' ' मुँजाल ने सक्षेप में जवाब दिया ।

तैयारी कर ली । मेहताजी ने पूछा ।

रथा तैयारी करनी थी । एक सौ सवार साथ में ले जाता हूँ ।

मुँजाल ने उत्तर दिया ।

अच्छा कह कर महाऽमात्य शान्त रहे ।

आपको नींद में से जगाने का कारण यह था कि महाराजा पधारते समय फरमा गये थे कि भरोवर खुद जाय तब मुझे खबर देगा । मैं देख कर मेहनताना चुकान का हुक्म देदूंगा ।

महाराजा देखें तभी ही—वे न देखें तो क्या नहीं चले ?

महाऽमात्य ने कहा ।

मुझे हुक्म हुआ । वह मैंने आपसे अर्ज किया । मुजाल का व्यक्तित्व महाऽमात्य के आगे दबता था । इसलिये परवारी डोलती । अपने ही सोचने की बात है कि महाराजा पीछे कम फिरेंगे इसका तो निश्चय नहीं । बड़ा तक थोड़ लोगों को रोक रखना और खर्च खिलाना यह ठीक है ?

महाऽमात्य ने शेष से कहा ।

नहीं ।

तब ?

ऐसा हो सकता है कि थोड़ के नायक टिकम को रोक लिया जाय । शेष लोगों को मेहनताना चुका दिया जाय । मुँजाल ने कहा



पेसा कैसे हो ?

महाऽमात्य ने कहा ।

यह आप ही विचार सकते हैं । अगर मैं और कुछ कहूँ तो  
महाराजा को भी बुरा लगे और आप को भी । मुजाल ने कहा ।

घाट ! मेरे को बुरा लगने न लगने की क्या बात है । महाराजा  
को बुरा न लगे यहाँ तक कहता तो ठीक था । यह दाल में काला  
मालूम होता है कि महाराजा तुम्हें फरमावें और मुझे न फरमावें ?

मैं तेरी बात का विश्वास नहीं करता ?

महाऽमात्य ने कहा ।

तब मैं क्या भूठ धोलता हूँ ?

मुजाल को बखरा ।

नहीं । भूठ नहीं तो अध सत्य होगा

महाऽमात्य ने कहा ।

मेरे पेसा बटने और करने का कारण क्या ?

मुजाल सफाई दिखाने लगा ।

कारण है तभी तो तू इतनी सफाई पेश करता है । इस आयाज  
में महाऽमात्यपन की खुमारी नहीं परन्तु तेजी अवश्य थी ।  
फिर बोले—तू मालवे जाता है तो महाराजा को अर्ज करना  
कि जसमा से भी अधिकाधिक रूपवती स्त्रियें आपको मिल  
जावेंगी । गुर्जर सम्राटपाटण के महाराजा को ऐसी मनोवृत्ति  
शोभा नहीं देती । मगर मुजाल यह तेरे लिये भी अच्छा नही  
कि अपने स्वार्थ बश होकर महाराज को ऐसे नीच कार्यों में सह  
योग देकर गड्ढे में ढकेले । राजा महाराजा ही राज्य में  
शोभा के स्थान रूप हैं । और सिर्फ राज्य के मूषण हैं । राज्य

की व्यवस्था का कार्यभार अपने लोगों पर ही है। काय तो अपना लोगोंके ही करने का होता है। उस पर मुझ मार कर फायदा का रूप देना महाराजा का काम है। तेरे जैसे मंत्री जो अपने स्वार्थ के खातिर ऐसे हलके कार्य में माय देन लागें तो बहुत परिश्रमसे बनाया हुआ महागुजरातके टुकड़े होते कुछ भी बेरी न लागेगी। महाराजा को तो चाहिये कि यह प्रजा का पुत्रवत् पालन करे। राजा को प्रजा का पालक व सरक्षक होना चाहिये। मसक्त होने में तू ही जब मददगार हो जायेगा तो गुजरात को महागुजरात बनाने का स्वप्न धूल में मिल जायेगा। इस प्रकार कहते हुए अपने धोखने का असर मुजाल पर कैसा हो, यह महाऽमात्य देखते जाते थे और कहते जाते थे—

मुजाल तू ये मत समझता कि मैं मूर्ख हूँ। कुछ नहीं जानता हूँ। महाऽमात्य पद प्राप्त करने के लिये जब तक तैने क्या २ पास कैंके हैं—क्या २ पाइन्ट रचे हैं ? और क्या २ बटपटें सड़ी की हैं। वे मय मैं जानता हूँ। परन्तु मैं दूर गुजर करता हूँ। मैं तुम्हें छोटे भाई की तरह मानता हूँ और राजनैतिक कार्य में आगे बढ़ाया है तथा—अब भी चाहता हूँ कि तेरी शक्ति सम्पूर्ण विकसित हो मेरे से भी तू सबाया हो। इसमें तुम्हें आनन्द है। गुजरात का एक २ मनुष्य वन्नतय ने यही मेरी कामना है। परन्तु यह गुजरात का रक्षक होना चाहिये, पातक नहीं। उसके हृदय में महागुजरात की आशा रमती रहे दूसरी नहीं। तेरे में गुजरात को महागुजरात

रचने की भावना हो तो कह । मैं स्वयं तुम्हें महाऽमात्य पद सौंप देने को तैयार हूँ । मैं तो आज हूँ और कल नहीं अधिक से अधिक तो दो चार वर्ष निजाले या नहीं । मैं तो दण्ड नायक हो चुका, मंत्री भी हो चुका और महामन्त्रीत्व की काचली भी पहन कर उसकी जोगमन्त्री भी स्वीकार कर रही है । मनुष्य को जो बस्तु दूर से अच्छी व सुन्दर लगती है वही निकट आने पर और प्राप्त करने के बाद जटिल सी बन जाती है । उसकी विषमता व कठिनाइयों का अनुभव होने लगता है । महाऽमात्य को पद कोई मोहक वस्तु या सम्मान का विषय नहीं है । परन्तु काटों का ताज है । सुवाली सेन नहीं परन्तु रूढ़ ध्वजों जगह है । जो सावधान न रहे तो मारा जाय और अपना राज्य का व प्रजा का अहित कर बैठे । मुजाल ? तेरे से मैंने कई आशाएँ मान रखी हैं तू ग्लट पुलट बल कर उनका उच्छेद मत कर ।

मुजाल के पास जवाब देने की शक्ति नहीं थी । न वैयारी ही की हुई थी वह आया तो रजा लने को था परन्तु महाऽमात्य के स्पष्ट वक्तव्य के आगे वह बहुत दण्ड गया । धारिक २ बातों पर महाऽमात्यनी अथतः धराधर ध्यान रखते हैं । और मेरी सटपटों से ये पुरे वाकिन् हैं यह जानकर तो वह खलित होगया महाऽमात्यका कहना उसे अखरा । उसने कहा, कि ।—

आपने यह कैसे जान लिया कि महाराजा जसमा को पैत के घहाने रोक्ने को सूचित कर गये हैं ?

तो दूसरा क्या समझा जाय ? महाऽमात्य ने उच्च शिष्य ।

आप चाहे सो माने परन्तु मैं महाराजा को ऐसे कार्य में मदद करूँ यह कैसे मानते हो । मुनाक ने कहा ।

नहीं—

तब ?

मु जाल ! लम्बी बात बढाने में मजा नहीं तु महाराजा को ऐसे कार्य में कभी मदद नहीं करे विरोध ही करे, यह मैं भी मानता हूँ तो भी तेरी मुराद पार पाडने के लिये तु जसमा को सतरज कि सोगटी बनाना चाहता है ।

मु जाल चूपचाप सुन रहा था जो बात कोइ जान नहीं सके ऐसी राशर महाऽमात्य को कहां से मिला गई यह उस की घट मथल का विषय धन गया ।

मु जाल ? तू जा और कार्य फतह करके आना । मरी तुम्हे आशिष है बड़ो को अधिक से अधिक सुनना, समझना, और सहन करना चाहिये । मैंने तो कुछ नहीं किना है फिर भी मैं सब दर गुजर करक आशिष देता हूँ कि जा और फतह कर । मु जाल ने अचानक दोनों हाथ चोडकर शिर निःसूत्र दिया और चूपचाप बाहर हो चला ।

**ग्रहण करने योग्य शिक्षा—**

१ इस प्रकरण में यह दिखलाया गया कि सान्त्वना के सान्त्वना के योद्धा अभिकार मिल जाने पर योग्य शिक्षा से

दुरुपयोग करते हैं और आगे घटने की उनकी महत्वाकांक्षा कितनी बढ जाती है। यह मुजाल महता के वर्णन से स्पष्ट होता है। २ उच्चाधिकारी योग्यता के कारण उच्चाधिकार पाकर भी भान नहीं भूलते परन्तु वे उम पाटे के ताज समाप्त मानते हुए अपनी जगत्पदारी को समझ कर मदा सजग रहते हैं और सब तरफ निगाह रखते हैं तथा अपने विरुद्ध प्रयत्न करने वालों को दमन से नहीं किन्तु उसकी हरकतों को हजम करके उसके ऊपर कृपा भाव दर्शाते हुए उसे अपने आधीन करते हैं यह शातु महता के वर्णन से दिखाई देता है। ३—उत्तम मनुष्य अपने स्वामी को गैर रास्ते जाते हुए देख कर उसमें उनके सहायक नहीं होते हैं परन्तु उनको मन्मार्ग पर लाने का ही प्रयत्न करते हैं और दूसरों को भी यही शिक्षा देते हैं—जो शातु महता ने मुजाल को समझाया है। ४ प्रपची लोग का प्रपच उन्हीं लोगों के पाम कामयाब होता है जो साधारण समझके या भुददु है किन्तु जो चतुर है उनके आगे नहीं चलता। वे उसका भण्डा फोड करके उसे लज्जित कर देते हैं।





## स्वार्थ का वेग



आतिर्यातुरसातलगुणगण,      स्तस्याऽप्यघागच्छता,  
शीलशीलतरास्पतत्वभिजन,      स दस्यतां वहिना ॥  
शीयेवैरिणीषज्जमासुनिपत,      त्वथास्तेतुनकेवल,  
येनेकेनविनागुणस्तृणलव,      प्रायाममस्ताइमे ॥१॥

( भृष्टरि नीतिशतक )

भावार्थ — जाति चाहे रसातल में चली जाये, गुणों का समुह  
छीर भी उससे नीचे चले जाये, शील (सदाचार) पर्वत के शिखर  
से गिर कर उसके टुकड़े होजाये, इष्ट मित्र कुटुम्ब परिवार के लोक

घाटे अग्नि में जल जायें और शौर्यता पर घाटे शत्रुपात हो परन्तु मेरा अर्थ (धन) कायम रहे उसमें कोई विघ्न नहीं आवे क्योंकि इस एक ध विना मय गुण नृण के समान है। स्वार्थ समते हुए ये रहे तो रह और न रहे तो इनकी मुझे अपेक्षा नहीं है। ऐसे स्वार्थ भावना से मने हुए दिल पर किसी प्रकार के हितोपदेश का असर नही पड़ता वह प्रमाय स्वार्थ भावना जाग्रत होते हो कापूर हो जाती है और वही जहरिले विचार अपना अमल जमा लेंते हैं सो इस प्रकरण में दिग्याई देगा।

पाटण से निकल कर मु नाल सीधा मालवा में आया महाऽमात्य की चतुर्यता एव घचा प्रहार की शक्ति के आगे वह निर्बल बन गया था सो पाटण की भीमा तक तो उसकी दृष्टि के समक्ष महाऽमात्य का व्यक्तित्व कायम रहा परन्तु धीरे २ हृदय के कौने में दवा हुई महाऽराजा ने अपना आक्रमण करना प्रारम्भ किया इससे उसका चित्त ढावाझोल हो उठा। यद्यपि महाऽमात्य के उपकार उनके शक्ति परम पर अक्षित अशक्य थे। परन्तु महाऽमात्य पद की महत्वाकांक्षा न उनको अधिक समय तक न टीकने देकर दूर किये।

वह विचारने लगा कि उपकार हैं तो क्या हुआ ? अपना भी महाऽमात्य पद प्राप्त करने के बाद उपकार का बदला प्रत्युपकार से दे देंगे, थोड़ी देर में फिर विचार धारा पलटी चाहे कुछ भी हो क्षेत्र घताने वाले तो बेही हैं अब कितनेक बैठे रहेंगे ? पुरे वृद्ध हो

चूके हैं दो चार या पाच वर्ष बाद भी महाऽमात्य पद मुझे ही प्राप्त होगा क्यों प्रपच करूँ परन्तु फिर विचार आया कि बीच में कोई नयी आफत निकल आवे तो ?

स्वार्थ ऐसा चिन्ता पदार्थ है जिस पर कोई भी अच्छे विचार ठहर ही नहीं सकते चट से फिमल जाते हैं। इस प्रकार विचारों की घड़मथल में मार्ग तय करके महाराज की छावणी में घड़ आय पहुँचा और मौका पाकर महाऽमात्य को मात करने की ठान ली। महाराजा को पाटण की व आसपास की परिस्थिति का परिचय कराते हुए उसने कहा कि—

महाराज। दुधमल न कहलाया है कि ओड़ लोग रात और दिन नहीं गिनते हुए काम कर रहे हैं छे सात रोज में काय पूर्ण हो जावेगा। उसने मेरा हुक्म महाऽमात्य को विदित किया कि नहीं ?

महात्मा ने प्रश्न किया

वसी ने मुझसे कहा और मैं उन्हें कहे बिना रहूँ ? परन्तु महता जी ने कहा कि महाराज को जो हुक्म करना था मुझे ही क्यों न करमाया ? अभी पाटण के राज्य की जबाबदारी तो मेरे शिर पर है न ?

मुंजाल ने बात को बता कर कही

ऐसा अभिमान बढ़ता जा रहा है। महाराजा नर में ही घृण खाते हुए प्रोध में आकर घोषे-भरे राज्य में ऐसा महाऽमात्य नहीं चाहिये चाहे राज्य ही दिने भि न क्या न हो जावे मुंजाल व अभी का अभी पाटण जा और मैं तुझसे देता हूँ कि मेहता महा



5मात्य पद छोड़ कर तेरे सुपुर्न कर दे ।

महाराज ने आदेश में कहा

महाराज । त्तावल मत करो मालवा जीत टोन के बाद जो परना हो वह करना । मूजाल ने बात को समाकते हुए कहा

और अभी कुछ नहीं विगडा है अब भी पाटण पधार सकते हैं । जो कल सायकाल को निकल सकी तो भी जिस रोज मैहनताना चूकाने का है उस रोज पाटण पहुँच सकते हैं या उससे पहले भी । अभी तालाब का काम कुछ चाली है । मूजाल ने अर्ज की

मालवा की राज्यधानी रज्जैा को महाराजा सिद्धराज ने घेर रकरा था और मालव पति को घबराने का प्रयत्न कर रहा था परन्तु मालवपति युद्ध में खुल्ले आम नहीं उतरता था । गुजरात का सैन्य शहर के प्रकोटा के पास डेरा तन्वू डाल कर पडा हुआ था कौन जीतेगा और कौन हारेगा यह निश्चित नहीं था इसलिये घेरा उठा कर पाटण जाने में ती नामोशी थी तब उसी रोज रात्रि में महाराजा सिद्धराज ने आनन्द पृथ्वीपाल दादक और चाग्भट को अपने टेरे म रानगी बुलाये और तलाह की, दूसरे ही दिन किसी को मालुम न पड़े इस तरह महाराजा सिद्धराज मूजाल व भट्टराज को साथ लेकर गुप्त रूप से पाटण तरफ निकल पडे । रास्ते में पुरा आराम भी न लेते हुए जल्दी ही पाटण पहुँचा जायपेसी प्रवृत्ति धारण की हुई थी ।

चार दिन के बाद गुजरात की मरहद में पहुँचने की ताकिद करते ये इतने में ही अचानक वे किमी व्यूह से घिर गये महाराजा

और मुजाल को छुड़ भी ममक नहां पड़ी कि यह क्या मामला है। अक्ला कर महाराजा के साथ सलाह कर के पीछे हटते हटते युद्ध करने का निश्चय किया मुजाल महेता ने शीघ्र ही हुक्म छोड़ा और एक हजार अश्व का सैन्य तैयार हो गया महाराजा को बीच में लिये और मुजाल सैन्य के अगले मोरचे पर जा खटका। परस्पर दोनों सैन्य में जय मोमनाथ का आवाज होते ही युद्ध आरम्भ हो गया अश्व मुजाल को ज्ञात हुआ कि शत्रुओं को हमारे विदा होने की राशर मिलने से उन्होंने पुरी तैयारी के साथ हमारे उपर आक्रमण किया है। किसी भां तरह गुजरात की सरहद में प्रवेश करने का इनका इरादा था क्यों कि महाराजा के दिल में एक दिन की डील भी एक भय जितनी थी परन्तु शत्रु लोग इनकी युक्ति को जान गये और आक्रमण उसी रोज से चालू रखा।

तीन दिन यहाँ धीत गये घमसात युद्ध हुआ मुजाल महेता ने देखा कि आधे मनुष्य तो कट चुके हैं मदद के लिये पाटण सन्देश पहुँच मके पेसी अथ स्थिती रही नहीं इसलिये अत्र तो हारे बिना छुटकारा नहीं।

धीरे धिन उन्होंने मरणीये होकर लडने का निश्चय किया परन्तु गुजरात का सैन्य पिड्ड गया साज, पड़ते पडते महाराजा और मुजाल महेता दोनों विर गये अथ पकडाये बिना दुसरा उपाय ही क्या था ? परन्तु महाराजा सिद्धराज के हाथ से अभी बहुत

काम होना शेष हैं इसलिए प्रकृति भी कुछ काम करती है। सामन कुछ दुरी पर से धूल उड़ती हुई दिखाई दी। और शत्रु दल एक दम धमका सूर्यदेव नजर से बाहर हो गए ये जिस स स्पष्ट कुछ भी दिखाई नहीं पड़ता था केवल गुजरात की तरफ से धूल उड़ती हुई जोर से दिखाई दी विचार करते हैं इतने में तो जय सोमनाथ की ध्वनी चारों ओर से सुनाई दी इससे सिद्धराज और मुनाल को छोड़ कर शत्रु सैन्य में से उनके साथी मील लोग लस्कर सहित भाग गये और शत्रुओं का सरदार भी इस नवीन परिस्थिती से घबराया उमने भी मौका देख कर एक दिशा पकड़ी महाराजा और मुनाल ने इस मुधरी हुई परिस्थिती का लाभ लेकर अपना रहा सहा दल एकत्रित कर के शत्रुओं का पिछा पकड़ा परन्तु थोड़े आगे घटे कि एकदम धमके।

कौन ! दुधमल ?

महाराजा ने पूछा ।

जी ।

दुधमल ने जवाब दिया ।

तू कदा से आया ?

महाराजाने प्रश्न किया ।

पाटण से ।

दुधमलने जबाब दिया ।

पाटण से ?

महाराजा ने कारण जानना चाहा ।

जी । महेताजी महाऽमात्यजीने हुकम दिया जिसे तामिल करना पडे ?

दुधमल ने कहा ।

यसा ? महेताजी का नाम सुनकर मुनाल ने आश्चर्यव्यक्त किया ।

महेता कहा है ?

महाराजा सिद्धराज ने पूछा ।

सैन्य क पीछे ।

दुधमल न कहा ।

और पाटण में ?

महाराजा ने प्रश्न किया ।

पाटण में राज्यमाता और आंबहभाई हैं । दुधमल ने कहा ।

सौरठ म से पाटण पर अणुचिन्ता कोई हल्ला करे तो ?

महाराजा ने सशक्ति वचन कर पूछा ।

तो राज्यमाता लड़ेगी ।

धीच में ही मुलाक़ बोझ उठा ।

माताजी को लड़ने जैसी परिस्थिति ही नहा मिले तो ?

महाराजा ने फिर प्रश्न किया

पाटण की रक्षा कर सके इतना सैन्य कहा रखा है ।

दुधमल ने लबाब दिया ।

महाराजा की समझ में नहीं आया कि सैन्य तो महेता साथ लाये हैं दूसरा मालवा में घेरा डाल रक्खा है तब पाटण में कहा से रहे ? महाराजा ने शंकाव्यक्त की इतने में तो मसालें जली प्रकाश में महाराजा और मुजाल मेहताने सैन्य को देगा तो महाराजा सिद्धराज के आश्चर्य का पार ही न रहा ।

दुधमल यह क्या ?

महाराजा ने पूछा ।

महाराज सैन्य ?

दुधमलने जवाब दिया ।

ऐसा सैन्य ?

महाराजा ने फिर सादर्य पूछा ।

महाराज इस सैन्य से तो आप छूट ही सके हैं ।

कहा परन्तु महाराजा ने इस व्यंग्य को नहीं मना

वो गमालों के प्रचार में तै यकी गांव रही थी। सैतियों की संख्या अर्द्धे ल'वर की घराघरी करे इतनी थी, इस म गोठे मवार भी ये नांशे नवार भी थे। और पैदल भी थे कमी हाथ में तलवार नहीं ठाई ऐम कृपक भी थे और तालाब खोदने पाते खोड भी थे सय कोठे गुजरात के वीरों की पोशाक में सजे हुए थे।

पण महाराजा आगे बोलते हैं इतने में महाराज, इमसिदाय दूमरा उपाय ही नहीं था पाटण की रक्षा के लिये मी तो मैय चाहिये, आधा से अधिक तो मालवा क घेरे मं टै फिर लाना कहां से ? इसलिये महाऽमात्यनी गढेनाची न युद्धि उपार्जन की ओर पाटण से निकलने बाद घा सका इतना टोला इपट्टा लिया अपन शत्रुओं को फेवल मर्या दिग्गानी थी इम लड़ने वाला या मरने वाला कोई भी नहीं है। लड़ने याने ये ये तो शत्रु के पीछे पड़े हैं। कितनीक धार धीरता काम देती है कितनीक धार मर्या और कितनी धार युद्धि का फौशल्य भी।

तुम की हमारी ग्वर वहा से पही ? महाराजा ने पूछा

इसकी तो मुझे मालुम नहा-महाऽमात्यनी ने फरमा न निकाला तभी ग्वर पड़ा दुधमल ने सय घाल को सामने रखी

महेता वहां ? महेता का नाम यान् आते हा महाराजा न पूछा शत्रु के पीछे पडे मालुम होते हैं फहकर दुधमल चला। मुताल चलो देखें फहकर सिद्धराज महेता की तरफ चल। महाराजा तीन धार मधार को लेकर आगे निकल गये।

मठेना को देखा ?

किसी सैनिक से महाराजा ने पूछा

जी। वे तो प्रातः काल पाटण पहुच जावेंगें।

एक सैनिक ने जवाब दिया

जाते रहे ?

महाराजा ने साध्यपूछा

हा। उन्होंने देखा कि जीत अपनी ही होगी कि तुरत विदा हो गये ?

सैनिक ने उत्तर दिया

कठे बिना ही ?

महाराजा ने फिर कहा।

परन्तु बरत चाहिये न ? पाटण पर १ मातुम किस समय आप्त था जावे राय खेंगार लाग देल रहा है।

सैनिक १ जबाब दिया

ठीक। कहकर सिद्धराज १ अश्व पीछा फेरा सैनिक ने भी अपना अश्व पीछे पीछे ही रखा।

अथ निश्चन्तता थी इससे महाराजा को सोचने का समय मिला। गुजाल महता और महाऽमात्य शांतु महता दोनों महाराजा के मगत में तूफान का विषय बन गये, महाऽमात्य महता महाराजा के हृदय पर विजय प्राप्त करे हुंमक पहले ही मुचाल सामने आता हुवा दिग्वाई दिया।

महाराज ? क्या पता भिक्षा।

गुंजाल न पूछा

वे तो पाटण गये।

महाराज सिद्धराज ने कहा

हां सिद्धराज के पीछे जाते हुए सैनिक हैं।

मुजाल की दृष्टि पीछे धाने वाले सैनिक पर पड़ी और वह चमका अपने अश्व को एक तरफ लेकर सैनिक के पास जाकर आश्चर्य व्यक्त करते हुए पूछा ।

सरयू ? तू कहां से ?

सरयू ने कुछ जवाब न देने हुए ऊगला उठाकर नाक पर स्थिर की इस अगुली में इतनी ताकत दी कि मुजाल को चुप रहना पडा एक शब्द भी वह नहीं बोल सका ।

### ग्रहण करने योग्ये शिक्षा

१ इस प्रकरण में स्वार्थ पटुओं की प्रपच कला का आवेदुय परिचय होता है लालमा क्या नहीं कराती मनुष्य को ऐसा उलट देती है कि वह कुछ भी नहीं सोच सकता जो मुजाल महता के बखान से समझ में आवेगा २ उच्चाधिकारी जैसे कार्य कुशल एवं दूरदर्शा होते हैं और ये स्वामिभक्त कैसे होते हैं यह शांतु महता के कार्य से स्पष्ट है । यदि महाऽमात्य औरकी खबरदारी नहीं रखते और महाराज को मदद नहीं भेजते तो महाराजा का गुनरात सही सलामत पहुचना कठिन था पर यह महताजी की कार्य कुशलता थी जो अपने मालिक को बालबाल बचालिया किन्तु यह सब प्रच्छन्न रह कर ही किया है आज तो कार्य कुछ भी करे या नहीं करे स्वामि को इतना स्थूल रूप दिखावे कि हमारे जैसा खैरबा शायद ही कोई हो इतना ही नहीं कोई ३ कर्मचारी उपर से बफादारी दिगाव और अन्दर से जड़ रोम्बली करते हैं ।



फलसूत्रम्



एकेसत्पुरूपाः परार्थघटका स्वार्थं परित्यज्यये ।  
सामान्यतस्तु परार्थमुद्यममृतः स्वार्थानविरोधेनये ॥  
तेऽमिमानुपराक्षसापरहित स्वार्थायनिघ्नानिये,  
येऽघ्नन्ति निरर्थक परहित तेकेनजानिमहे ॥ १ ॥

( भवृहरिनीतिशातक )

भावार्थ—सत्यपुरुष वे हैं जो दूसरो के हित के लिये अपने स्वार्थ को छोड़ देते हैं । सामान्य पुरुष वे हैं जो परहित भी करे और साथ ही अपना स्वार्थ भी साधे । राक्षस पुरुष वे हैं जो अपने स्वार्थ के लिये परहित को नष्ट कर डालें । परन्तु जो अपना



स्वार्थ न होत हुए भी पराये हित में व्यापात करें, उमे क्या अपना दी जाय ?

जलमा १ किनी का कुछ नहीं दिगाड़ा है जो टगके विरुद्ध किमी को प्रपंच रचना पड़े परन्तु स्वार्थी लोग अपना स्वार्थ साधन और महाराजा का कृपापात्र बनने के लिये कैसे २ पड़ यत्र रचते हैं यह इस प्रकरण में दिस्टाई देगा ।

अर्द्ध रात्रि घीत गई थी, गुजरात की मरहद में प्रवेश कर के सब आराम ले रहे थे अम के कारण सेरिफ लोग नींद में खरटि भर रह धे, उम समय मुजाल महेता महाराज के तन्मू में कुछ मनाह कर रहा था ।

महेता कैसे जाता रहा होगा ?

महाराजा ने कहा

कुछ पता नहीं चलता

मुजाल ने जवाब दिया

तो अब क्या करना ? महाराज ने अपनी कठिनता प्रदर्शित की

आप पाटण पधारो ।

मुजाल ने कहा

और तू ?

महाराजा ने प्ररम किया

मैने तो आपसे अर्ज की है कि मुझे तो मालये जाना ही पडेगा इसका कारण यह है कि शत्रुधों की हिल चाल से पुरा सावधान रहने की जगतरत है

मुजाल ने कारण बताया

पाह । यह ठीक, तू इन्कार फरता था सो तो मैने आप्रह करके साथ आने को कहा और अब घीच में छोड़कर जावेगा ?

महाराजा ने अत्या प्रह किया

यों नहीं। शत्रु अपनी हिल चाल से पुरे धाकिफ हैं। नहीं तो वे अपने को बीच में घेरते नहीं मुजाल ने मुहा धठाया।

परन्तु वहाँ तो दादक वगैरा है न ? महाराजा बोले

यह बात सच्ची है परन्तु एक से दो अच्छे। आपको भी तो काम बनाकर पोछा फिरना है न ? मुजाल ने टकोर का

तो फिर पाटण में मेरा क्या काम है ?

सिद्धराज ने बात को दधाने के लिये पकटो

दूमरा तो क्या है ? मदेता बहा है ही राज्य गाता भी है परन्तु आप खुद नजर रखो उसमें बहुत फरक पड़ता है। तालाब का काम भी कितना हुआ है कितना नहीं किस तरह होता है इसकी संभाल सबने रखी ही होगी। परन्तु आप देखलें यह सब से अच्छा है। मुजाल ने बात को बना कर कही

ठीक। तू कहे वैसा करुं, परन्तु वहाँ की ( मालधे की ) नई सुरानी रखर देते रहना। महाराजा ने इजाजत दी।

जी ! कह कर मुजाल लड़ा हुआ और तम्बू के धाहर निकला परन्तु निकलते २ घड़ षोल उठा।

और महाराज

सिद्धराज का ध्यात भाकर्षित हुआ और पूछा क्या ? मुजाल की जवान पर रायू का नाम धाया परन्तु अदृश्य रह कर रोष

गालिय करते हुए सैनिक ने इशारा किया इससे वह चूप हुआ और बात बदल कर बोला। मेरे जाने की बात बाहर न पड़े ?

अब गुप्त क्या रहा ? महाराजा ने प्रश्न किया।

जितना रहा उतना तो रखना कह कर हसता हसता बाहर निकला और तैयार रहे हुए अश्व पर बैठे कर बाहर चला

मुजाल के जाने बाद महाराजा ने पहरे वाले को बुलाया ? पहरेवाला हाजिर हुआ और हुक्म की प्रविक्षा करने लगा। दुधमल चावडा को बुलवाओ। महाराजा ने हुक्म दिया दुधमल हाजिर हुआ और पूछा क्या हुक्म है ?

दुधमल क्या समस्या है ?

महाराजा ने पूछा

महाराज महेंता जी गये हम में मुझे बहम आता है

दुधमल ने कहा

क्या ?

महाराजा ने फिर पूछा

जसमा की आज की आप रवाने कर देगा। दुधमल ने कहा तुम्हें क्या खबर ?

महाराजा ने कारण पूछा

आपसे मिले बिना महेंता जी जाते नहीं ? दुधमल ने भयान नाम से कारण बताया।

पर अभी पहुँचेगा करेगा इतने में आपन भी पहुँचते हैं महाराजा ने बात को आगे बढ़ाई।

यह सब ठीक परन्तु अपना पहुँचगे वहाँ तक तो ये सब ठीक ठाक कर देंगे महाऽमात्य जी की कला को कोई नहीं पहुँचता दुधमल ने विचारणिय धात कही ।

तो अब क्या करना चाहिये । महाराजा ने पूछा

करना क्या ? मैं अभी का अभी जाऊँ दुधमल ने कहा ।

फिर महाराजाने पूछा ।

महेता बुद्ध (घटमथल) परे उस सथ पर पानो फेरू ।

दुधमल ने अपनी युक्ति रजू की ।

किस तरह ? महाराजा ने पूछा ।

कोई न जाने उस तरह । दुधमल ने महाराजा के पास खिसकते हुए कहा कि आपका दिवाग खाना है वहा थोड़ी दूर पर दाईं तरफ एक कमरा है उसमें केद थोड़ी दार अटक कर बोला और पूछा ठीक है न ।

हा ठीक है । महाराजा ने स्वीकार किया ।

आप पधारना दुधमल ने अपनी योजना की सफलता मान कर कहा और कभी परियाद हो तो घोलकर पी जाना आपको आता ही है आप सभाल लेना । और महाराजा के पास आकर कोई न सुन सके इस तरह दुधमल न पाच सात वाक्य कह डाले ।

अरे तू तो गल्ला है इस तरह भूल जाते होंगे । महाराजा के मुह से इस तरह के वचन निकल पडे ।

दुधमल चापड़ा उठा बाहर निकला और तम्बू के बाहर

टहलने लगा मैत्रियों की जरूरत चुका कर दूर जाके तैयार स्वर्ग  
दृष्ट अश्व पर चढ़ पाठण की तरफ चल दिया ।

स्वार्थी लोग अपना स्वार्थ माधने व महाराजाके कृपा पात्र  
बाने के लिये कैने २ अट्ट व पत्नी को तैयार हो जाते हैं और  
अपन स्वामी को एक सलाह देने व श्रद्धा कैने २ जाल रचनाते हैं  
और उनमें निर्दोष मद्गुणो मनुष्यों को फसा कर वे अपना स्वार्थ  
किस प्रकार माधने हैं यह दरु कर ही महापुरुष मसार से विरक्त  
होकर सुख की सामग्रियों को सातमार फिर निकल जाते हैं और  
अन्य भव्यजीवों को मद्बोध द्वारा धचाने की चेष्टा करते हैं ।

दुधमल करीब दश कोस पहुँचा होगा कि अचानक पिछे से  
एकदम डोरी का फासा उस पर ऐसा पड़ा कि डोरी विचते ही  
उसके दोनों हाथ शरीर से मख्त बाध गये वह जाता हुआ  
अनेक प्रकार के विचारों में ऐसा उलझ रहा था कि इधर उधर  
आस पास आगे पिछे कौन आ रहा है उस बात का मान ही  
गर्ही रहा ।

फासा पड़कर धन्वने पर उसने पीछे फिर कर देखा तो एक  
सवार घोड़े पर वहाँ खड़ा था परन्तु हाथ जकड़ा जाने से तलवार  
तक नहीं पहुँच सकता था अश्व पर से उतरने के लिये छलाग  
मारने लगा तो डोरी खींचकर वह नीचे गिर पड़ा । दुधमल बैठा  
हो ही रहाथा कि इतन में तो आग-बुक छलाग मारकर घोड़े से  
घतर कर उस पकड़ में ले लिया और सैनिक के पैर भी बाध  
दिये नीचे पटक कर कहा कि—

पहचाना ?

कौन

दुधमल ने पूछा

फिर पूछता है कौन ? भावाज से नहीं पहचान सका  
सैनिक ने रोप से कहा ।

हां हा पहचान गया सरयू ? दुधमल ने भावाज पहचान कर कहा

हां सरयू

सैनिक ने कहा ।

बावने का कारण ?

दुधमल ने पूछा

कारण तो महाराजा को पूछना

सरयू ने कहा ।

ठीक ठीक समझ गया

दुधमल ने कहा

समझ ने की बात तो पीछे परन्तु खयाल रखना कि जसमा  
जो काम नहीं कर सकती वह में कर सकती हू चावड़ा । जसमा  
यों नहीं मिलेगी । जब तक सरयू जीवित है ।

में भी देखता हू ।

दुधमल बख लाकर धोखा

में भी देखती हूँ । महाराजा को दिलासा तो तूने बहुत दी है  
परन्तु वह तेरी आशा किस तरह फली भूत होगी यह न समझना  
कि यहाँ महता है और महता के माफिक ठण्डी ताकत से काम  
लिया जायगा यहाँ तो तुरत कुरत मजा चला दिया जाता है ।  
इतना यह कर ऊपर से एक लात मारी और वहीं बन्धा हुआ  
छोड़ कर सरयू अपने अश्वपर चले पाटण की तरफ चलदी  
सरयू एक क्षत्रिय कन्या हैं यह बड़ी ही हिम्मत वाली है ।  
पहले तो यह और इसका बड़ा भाई घनपाल दोनों ही शानु

महेता के पक्षे शत्रु थे इसके भाई धापाल को तो महेताजी ने मारा था यह भी मौका देख कर महेता का खून करने के प्रयत्न में थी परन्तु महेता जी के दीर्घायु एव तप तेज के आगे वैसा न कर सकी यानि इसकी हिम्मत नहीं पड़ी। धापाल के मरने के बाद यह अकेली रह गई थी। एक समय सरयू भरूच में मदनपाल ठाकुर के चूगल में पन गई थी वह अपनी दुर्भागिना इमसे पूरी करना चाहता था यह उसे नहीं चाहती थी अतः मैं महेताजी की मदद से छुटकारा पाई तब से उनक पास ही उन की बकादार होकर रहती हूँ और महाऽमात्य क कई अगत्य के कार्य करती थी सरयू महाऽमात्य की विश्वास पात्री थी। महाऽमात्य इसे पिछली रात्र लाने को छोड़ गये थे सो दुसरे गेन मानकाल होते होते पाटण पहुँच तो गई परन्तु अधिक थकने के कारण कमर मँ जाकर सोगई-जसमा को उस घात की सूचना करना भूल गइ। परिश्रम के कारण ऐसी नींद आई कि प्रातः काल हो गया और महाऽमात्य के पुत्र पुत्री बयजू एव देवल हाडु करने लगे कि बड़ी बहन आगइ बड़ी बहन आगई तब शोर गुल से नींद खुली। सरयू के आगमन के समाचार महाऽमात्य को मिलते ही ब तुरन्त आये और सरयू से पिछा सब वृत्तांत जान लिया।

आपन जसमा को सूचना करा दी है ? सरयू ने पूछा  
 फल तब व्यवस्था फरकें ही आया हूँ। महाऽमात्य ने जबाब दिया।

क्या 'यवस्था' की है ?

सरयू ने पूछा

कल के कल रात ढलने पर चूपचाप रिदा होजाय सो व लोग  
तो रवाने हो गये होंगे और श्तिनी ही दूर निकल गये होंगे ।

महेता जी ने कहा ।

तपास कराई ?

फिर सरयू ने पूछा ।

मैंन आंघ को कह रखा है अभी आता ही होगा ।

महाश्वरथ ने कहा

इतने में आंघ आया

और महेता जी ने पूछा

क्या गये न ? जवान नहीं मिला क्यों ?

महेता जी ने पूछा

जसमा गुम ह

भांघ ने उत्तर दिया

क्या कहता है ?

महेता जी ने भादचय प्रकट किया

कल रात्रि में वे लोग तैयारी नहीं कर सके फनर में निकलाने  
की तैयारी करते थे कि अचानक कोई जसमा को उड़ा कर ल गया  
ओड़ लोगा ने अभी ही मुझे पता है ।

भांघ ने कहा

तब तो बाजी हाथ से गई ? परन्तु ठीक है । सरयू चावड़ा  
की तो बांध ही आयी है इस लिये उदला ले सकेंगे ।

महेता जी ने अपना विचार प्रकट किया ।

परन्तु दुधमल चावड़ा तो यहाँ ही है ।

भांघ ने कहा

क्या कहा ?

सरयू बोध में ही बोल उठी

घड़ी फनर ही मैंने राज्यमठ में उसे देखा है ।



तब तो मैं ही जाऊ ? कदम कर महाडमात्य जाने को तैयार हुए और दिवान स्वाने ङ बाहर पैर रखा इतने में तो थोड़ लोगों ने आकर महेता जी को घेर लिया और थोड़ लोगों का नायक टीकम श्रोत बोला—

मों बाप ! आपका कहना नहीं माना रात को तैयार नहीं हो सके देरी हो गई दिन उगते २ रम्भा बहन के नाम से कोई धल करके उसे ले गया । वह भी रम्भा बहन के नाम से धोखे में आगई और साथ हांगई । वहां तपास कराई तो खबर मिली कि यहा तो किसी न नहीं बुलाया और न वह आइ ।

महेता जी और आबड भाई सब परिस्थिति की भांप गये थार उनसी विश्वास देकर दरवार गढ में गये

## ग्रहण करने योग्य शिक्षा

१ राजकीय प्रवृत्ति ऐसी है निम्नमें अनेक प्रकार की सावधानी रखनी पडती है और ऐस मनुष्य रखने पडते हैं जिससे वास्तु विरता का पना चल जायें । २ प्रपची लोग हम धात की प्रतिष्ठा करते रहत हैं कि कोई भोका मिले और हम अपना पासा सीधा करें इससे चाहे किसी का अहित ही क्यों न होता हो । ३ जो लोग माहमिक और हिम्मत बहादुर हैं वे किसी को प्रपची के प्रपच का शिकार नह। होने देते थे अपनी शक्ति भर छुड़ाने और प्रपची को शिक्षा करने में पीछे नहीं इटते पर अपनी जान जोखिम में डालकर

भी निर्दाप की सहायता करते हैं — तो सूर्य के वर्णन से ज्ञात हुआ होगा ४ किसी हितैषी के बचन पर ध्यान न देकर गफलत करने का व विपम वातावरण न किसी पर विश्वास करने का कैसा दुःपरिणाम होता है वह थोड़े लोगों और जसमा के वर्णन से ज्ञात हुआ होगा ऐसे समय में पुरी सावधानी रखनी चाहिये ।





## कसौटी और मुक्ति

मत्तमकुम्भदलनेभूरिसान्तिशूराः  
कोचित्प्रचण्डमृगराजवधेपिदक्षाः ॥  
किंतुभवामिचलिनापुरत प्रसह्य  
कदर्पदर्पदलनेधिरलामनुष्या. ॥

(भर्तृहरि शृंगार शतक)

भावार्थ—उन्मत्त हाथी क मम्तरु को रिदारन बाने शूर इस पृथ्वी पर अनेक हें और प्रचण्ड गिह क भाग्ने में दत्त योद्धा भी कितने ही हें परन्तु हम धलानों के आगे हठ करके कहते हें कि

कामदेव के मद का दमन करने वाला कोई विरला ही मनुष्य होगा।

मदन का वेग इतना बलवान है कि इसे रोकने के लिये बड़े बड़े योद्धा भी समर्थ नहीं हैं। वे भी स्त्री के स्वाभाविक हाव भाव से आकर्षित होकर रणभूमि से वापिस चने आते हैं। महाराज मिट्टराज भी जसगा के आकर्षण से स्त्रीके हुये पाटण आ पहुँचे हैं। और हर उपाय से उसे अपनी बचाने के लिये क्या क्या प्रयत्न करते हैं और अन्त में वह कैसे छुटकारा पाती है सो हम प्रकरण में दिखाई देगा।

आज पाटण का घातावरण उम धन रहा है महाराजा सिद्ध राज पाटण आ पहुँचे है और आज प्रात काल ही महाराजा ने दरबार के अन्दर आते ही महाऽमात्य का अपमान किया मालथा के राजा के सामने युद्ध का मोरचा न लेकर दंड की रकम देने के अभियोग में महैताजी को महाऽमात्य पद के अयोग्य ठहराये। महैता न हो ती भी में अपना राज्य सभान सकूगा ऐसा जाहिर किया। इस प्रवृत्ति से पाटण की जैन और जैनेतर भना आवेश में आ गई थी परन्तु मिट्टराज को पाटण की प्रजा की इस समय सरकार नहीं थी। तुरन्त ही दरबार से निवृत्त होकर वह सीधा राज्यगढ म आये। और भोजन करके तुरन्त ही दिवागारा में पहुँचे।

वहरेदार को दुःख दिया कि मेरे से पत्रे लिखे -

खाना दें फिर भी वह जममें प्रसन्नता का अनुभव नहीं करती, यह तो जगल में मृत रह कर ही रहेगी पिजरे में नहीं।

जसमा ने निर्भङ्गता से जवाब दिया।

जसमा। तू ऐसे मोटे कपड़े (जाड़े कपड़े) पहने की नहीं जन्मी है तेरा बदन तो य रात्रशाही रंगीले चमकीले और महीन कपड़े की पोशाक व हीरे जवाहिरात या मोती के दागिनों से ही सुशोभित होता है। मुझे तेरे इस सुकुमाल बदन पर ऐसे ढाटड़े देकर दुःख होता है तू महल में चलकर बहाना की छटा तो दे।

महाराज ने फिर धैर्य ही घाला पैका।

महाराज। मुझे न तो बारीक रंगीले चमकीले कपड़े ही चाहिये व हीरा मोती ही ये तो आपकी रानिया के बदन पर ही अच्छे लगते हैं। मेरे को तो ये मोटे जाड़े कपड़े और जगल में पैदा हुए घास की माला व पेस ही जगली आभूषण पसन्द हैं जिसमें मरा धर्म कर्म कायम रहे और मरे पतिदेव भी मुझ पर प्रमत्त रहें। मुझे हीरा मोती के दागिने और बारीक बख्तों की जरूरत नहीं है।

जसमा ने निर्भङ्गता से उत्तर दिया।

जसमा कड़ा सूजी लूजी रोटी खाने और बदन को प्रियाङ्गने से पकी है जरा विचार तो कर मेरे महलों में चलकर देख बहाना तेरे लिये अनेक तरह के मेयामिष्ठान और रसवती (भोजन) तैयार है जिससे कि तेरा यह शरीर दाप लड़े। वहाँ बहुत स दास दासी

तेरे हुकम मे हाजिर रहेंगे और तू राजरानी

..

महाराजा को अटकाकर बीच में ही जममा घोल उठी महाराज । थाप जरा विचार करके तों महल और बहा की सुख सायबी तो आपकी रानियों के लिये ही है ओडराणी के लिये तो गोपडी भला और धरती । महाराज में तो घाट रवा रसी है मेरे पेट में पकवान पच भी नहीं सकते मेरे लिये तो रात्र ब दलिया ही अच्छा है । मेरे को किसी दास दासी की जरूरत नहीं है मैं तो खुद दासी बनकर मेरे पति देव की सेवा करती हूँ और प्रसन्न रहती हूँ ।

जसमा ने स्पष्ट सुना दिया

तब तू नहीं मानगी ? साम दाम उपाय का प्रयोग घर के महाराजा ने देख लिया कि यह यों नहीं मानेगी इम लिये दंड नीति अत्याचार करने का निश्चय किया इतनेमें महाराज ? आप पिता मुत्य है प्रजा के रक्षक हों गुर्जर समाज को ऐसा करना

बीचमें ही जसमा को अटकाकर

जसमा—यह सुाने का गुम्मे अवकाम नहीं ऐसा तो मैं बाहर बहुत सुन ररा है यदि तू हा कहे तो आनन्द से महल के अन्दर रखने को मैं तैयार हूँ और इन्फार फने तो मेरा विचार तो फिरने का है नहीं तू सीधी तरह स्वीकार नहीं करे तो बरा से तुम्हे स्वीकार करना हीपड़ेगा

महाराज बोले उठ

अपना पल आप आनमा लीजिये मैं भी देखती हूँ कि आप पल द्वारा ... बराते हैं जसमा न भी हिम्मत से जवाब

इगफा परिणाम क्या आयेगा ? तुम्हें पत्थर है ?

महाराज ने ध्यंग में कहा ।

हां अधिक स अधिक तो रक्तपात

जसमा ने भी रुखाई स लषाव दिया ।

रक्तपात नहीं परन्तु तरा पात ।

महाराज ने जोस भं भाकर कहा ।

महाराज । यह विचार अमल में लाते २ तो आपको आकाश पाताल एक करना पड़ेगा हम लोग गरीब हैं इससे क्या हुआ ? गजुष्य तो हैं । आप जितने मानापमान का ध्या रसते हैं उतना ही हम रसते हैं आप जितनी ही इज्जत आपरू एर धर्म की भावना हमारे में भी है । आपने यह मोच रत्ता है कि गरीबों का क्या मुक पशु है तब घाहा तब मन माना उपयोग कर सकते हैं परन्तु इसमें आप भूलत हैं मैं आपसे प्रार्थना करती हूँ कि आप समझें, नहीं तो आपकी भूल राज्य को हानि प्रद घनेगी । जसमा न धीरता एक भपना मन्तव्य मुनाषा ।

मैं समझू गा तब तकतो नू पाटण की पटरानी धनचायगी ।

महाराज ने भी ध्यंग में ही कहा ।

महाराज । इस विचार को तो आप अपने हृदय में ही रहने दीजिये पाटण की पटरानी तो आपको दूसरी ही सोधना पड़ेगा पहकर जसमा प्रवाजों की तरफ जाने लगी । हैं मिद्धराज न कमरे पे बाहर तजर डालते हुए कहा तू सीधी तरह नहीं मानेगी न ।

सीधी या बाकी किसी भी तरह नहीं । जसमा ने स्पष्ट कहा ।  
 तब मैं देखता हूँ महाराजा थोड़े ।  
 और मैं भी देखती हूँ । जसमा ने भी घिसा ही उत्तर दिया ।  
 तुम्हें खबर है कि तू निःशस्त्र है ।

महाराजा ने उसका बल देखने के लिये कहा ।  
 परन्तु मेरे पास भी बड़ा शस्त्र है और बद्ध मनोबल का  
 जसमा ने बल प्रकट किया ।  
 तब तेरे मनोबल को मुझे देखना पड़ेगा ? महाराजा ने कहा ।  
 देखो । कह कर जसमा सिद्धराज से एक तरफ होकर आगे  
 बढ़ी ।

यस यही तेरा मनोबल है न ? कहते हुए आगे आकर  
 महाराजा ने जसमा का हाथ पकड़ लिया ।

जसमा एकदम घबराई और बुममारी तथा सिद्धराज को  
 धक्का देकर आगे बढ़ी परन्तु पीछे से उसका हाथ लिखा गया  
 इतने में आवाज आई । महाराज इसे गत धृष्ट ।

कौन ? सिद्धराज आवाज की दिशा की तरफ देखकर घमका  
 और कहा मेहता ?

जी महेश्वरी ने जवाब दिया ।  
 बिना इजाजत के ही । महाराज ने कहा ।



महेता जी बिलकुल सिद्धराज के पास ही आकर खड़े होगये ।  
जसमा एक तरफ खिसक कर खड़ी होगई ।

महेता के अचानक आ जाने से महाराजा एकदम लज्जित  
से होगय । अधिप बोलने की हिम्मत न रही हाथ पैरों में धूजण  
छुटगई कोई हिम्मत बधावे ऐसा वहां था भी नहीं ।

जसमा जल्दी बाहर निकल महाऽमात्य ने कहा ।

जसमा न महेता जी के सामने देखा और महाराज के  
सामने भी नजर पड गई वह कांपने लगी

डरेमत । मैं हू वहाँ तक तेरे सामने कोई आँसु उठा कर भी  
नहीं देस सकता जा बाहर तेरी राह देस रहे हँ ।

महाऽमात्य ने जसमा को हिम्मत दी ।

जसमा आगे बढ़ी महेता जी भी पीछे पीछे चले । सिंह गाजे  
इतनी शक्ति सिद्धराज की जीभ उपर आई परन्तु यह उसी समय  
विलीन होगइ । मुँह बिलकुल सीं गया । जीभ तालवे से निकलती  
ही नहीं ।

जसमा बाहर आई-महेता जी उसको राजगढ की ल्योढी तक  
आकर पहुँचा गये आर पीछे दिवानखाना में आकर खड़े होगये  
थे । अब उनकी आँखें वहा गुजाल महेता की देखने के तिय  
बस्तुक थी परन्तु वह कहीं भी नहा मिला यदि यह मिल गया  
होता तो महाऽमात्य उसे अच्छी तरह फटकारे बिना न रहते ।

निस समय महाऽमात्य गुजरात की सरहद पर स एकदम वापिस लौट गये थे उसी समय मुनाल समझ गया था कि महेता जी मै-य की छोड़ कर महाराज से बिना मित्रे ही लौट गये हैं मो घानी फेर देंगे और हमने जो महाराजा को पाटण ले जाने का प्रयत्न किया है वह निष्फल हो जावेगा इससे महाराजा को तो मालवा जाने का समझा कर रवाने हुआ था परन्तु मालवा न जाते हुए वह भी दूसरे रास्ते से पाटण का तरफ रवाने हो गया था दुधमल चावडा भी महाराजा से पाटण आने को बिदा हुआ था वह यह समझता था कि मेरे पाटण की तरफ रवाने होने की गवर किसी को नहीं है परन्तु तन्त्र के पीछे खिपी हुई सरयू ने महाराजा और दुधमल की मत्रणाए मुनली थी; इससे वह भी गुप्त रीति से पहजे ही रवाने हो गई थी और मौका पाकर दुधमल को रास्ते में ही घाव कर पटक के पाटण पहुँच गई थी परन्तु जसमा को मावचेत करना भूल कर थकी हुई अपने शयानागर में जाकर सो गई थी मुजाल महेता थोड़ी दूर त्त तो मालवा न रास्ते पर गया पर तु बिचार बदल जाने से वह आठे रात पड़ा था कारण महाराजा की छावणी में बचना था और किसी त मिल जाने का भी भय था । दूसरे रोज दुधमल जहाँ पर पड़ा हुआ था वहाँ पर आनिकला दुधमल को पहचान कर अश्व पर राहला करके कटार से उसके बन्ध फाटे और दोनों पीछ पीछे पर रावार होकर जल्दी से उसी रात को पाटण पहुँच गये । दुधमल ने पाटण आकर माउप किया तो श्रात हुआ कि थोहलोग जाने की तैयारी

कर रहे हैं पर अभी गये नहीं। दुधमल ने शीघ्र ही थोड़ लोग जाने लगे उस से पहले ही जसमा की बहन रम्भा के नौकर को बनाकर तुम्ह रम्भा बहन बुलाती है ऐसा उमे भेज कर कह लाया और जसमा को आते ही कच्चे में धरके दिवानखाने के कमरे में बन्द कर दी थी।

महाराज सिद्धरान भी आराम किये बिना ही एक दम पाटण पहुँच गये थे और आते ही प्रात काल दरबार करके पहले तो महासमात्य महेताजी का अपमान किया था और बाद दरबार बरखान्त कर के दिवानखाना में आये थे महासमात्य महेताजी चाहते तो उसी समय दरबार में ही महाराजा को जैसा का तैसा जवाब दे सकते थे परन्तु उस समय उन्होंने कुछ नहीं किया मघ मानापमान को पी गये कारण उनको जसमा का उद्धार करना चाही था जो उस जगह महाराजा के पजे से छुड़ा कर उनका उद्धार किया।

जसमा पाटण शहर को अन्तिम भेंट करके पाटण से आगे बढ़ रही थी। आँह मरयू और रम्भा उसे दूर तक पहुँचा कर वापिस लौट आये। थोड़ लोग उसके साथ आगे बढ़े जा रहे थे।

**ग्रहण करने योग्य शिक्षा—**

१ जन्म मनुष्य बामाघ हो जाता है और वैसे ही अनुकूल माघन या माघक मिल जाते हैं नय वह क्या अन्तर्ध नहीं करता और उममें विघ्न पड़ता दिखार्ह देने पर उन नेक नियत, खैर

स्वाह और गुरुजनों के साथ भी वैसा दुर्व्यवहार करता है सो महाऽमात्य का महाराजा के दरबार में किये हुए अपमान से स्पष्ट होता है । २ कामान्ध मनुष्यों को अपना हित चाहने वाले सज्जन भी शत्रु से लगते हैं और लुन्चे उदमाश आफत में फसाने वाले दुर्जन लोग अत्यधिक प्रिय लगते हैं इसमें वह सज्जनों का निरादर और दुर्जनों का आदर करता है और अपने आपको पतन के गव्हर में डालता है ३ कामान्ध मनुष्य अपनी लालसा पूरी करने के लिये साम दाम दंड भेद से सती पवित्रात्मा स्त्रिया को कैसे २ कष्ट में डालकर उनको प्रलोभन व भय दिलाता है परन्तु जो धर्म तत्व को समझने वाली पवित्रात्मा स्त्रिय होती है उसे समय में भी निडर होकर अपने धर्म पर अडिग रहता हुई उन कामा मनुष्या के दगाव में नहीं आती और अपने आत्म बल का परिचय देती है यह महाराजा सिद्धराज एव जसमा के गवाल जगाम में स्पष्ट है । ४ जो लोग नीतिमान एव परोपकारी होते हैं वे अपने माना पमान तथा पद रक्षा की परवाह न करने हुए अपने प्राणों को जोखिम में डालकर भी निर्धनों की रक्षा करने के लिये पहुँच जाते हैं और वहाँ से उनका उद्धार कर उन्हें सहिसलागत उस आपत्ति में से छुड़ा लेते हैं यह महाऽमात्य शत्रुमहता की साहसिकता स्पष्ट करती है ५ स्वार्थी लोग अपना स्वार्थ साधने एव अपने स्वामि के कृपा पाप धनने के लिये कैम २ धनार्थ परते हैं और निर्दोष मनुष्यों को फँसाने की चेष्टा करते हैं यह मुनाज महैता एव दुधमल क वगुन में प्रेरित होता है ।

## ज्ज्वाकदारी श्रौर फद् त्याग्

यद् चेतनोपिपादे,<sup>१</sup> श्रेष्ठप्रज्वलातिसवितुरिनका तः ॥

तत्तेजस्वी पुरुष परकृत विकृतिकथसहते ॥ १ ॥

(मत् हरि नीतिशतक)

भावार्थ—सूर्य का तमणि सूर्य के पादस्वरूप किरणों के लगते ही जल उठती है इसी तरह तेजस्वी स्वाभिमानी पुरुष भी परकृत विकृति को कैसे सहन कर सकते हैं ? अर्थात् कभी नहीं ।

महाराजासिद्धराज ने अपने स्वार्थ में बाधक बनने के कारण पुरुष के सय उपकारा और सेवाओं को भूल कर गुर्जर महामन्त्री



अब यह नहा हो सकता। महामात्य ने भी वैसा ही मञ्जूर  
जवाब दिया।

मन्धा की कदर करके मुद्दत तक एक की एक जगह ही जवाब  
दारी सौंप रखी इसका लालच लगा है क्यों? कहकर महाराजा  
ने पहरेदार को आवाज दी।

जी कहता हुआ पहरेदार हाजिर हुआ।

महेता को गिरफ्तार करलो महाराजा ने हुक्म बिष

पहरेदार कुछ आगे बढ़ा किन्तु तुरन्त ही दो पांव पीछे हठ  
गया महेताजी के मुह पर से निकलते हुए अपूर्व तेज पुज  
के आगे बिचारे पहरेदार की क्या ताकत? जो आगे बढ़े  
महाराज। महेताजी के बदले मुझे बन्दी बना लीजिये।

पहरेदार ने अर्ज की

अब तो सिद्धराज का क्रोध अधिक भड़क उठा और आवाज  
दी कोई है हाजिर?

आवाज सुनते ही अनेक मनुष्य हाजिर हो गए और राज्य  
गढ़ की गढी पर का नायक (कप्तान) भी हाजिर हुआ दास  
दासी भा आ गए और पहरा देने वाले अनेक सैनिक भी खड़े  
हो गये महेता को पकड़ कर महामात्य सूचक राज्य चिन्ह उसके  
पास में लेलो।

महाराजा ने उग्रता पूर्ण हुक्म सुनाया

। सुनकर सब के सब स्तब्ध रह गये कोई भी हिला या चला  
नहीं राज्यगढ़ के अन्दर फौलाहल भंग गया वातावरण ही बदल  
गया और कोई उतकापात होता हो वैसा भयंकर द्रश्य सब को

लगा जिस का निवारण करना किसी मे भी शक्य नहीं था किमी में कोई भी रास्ता टूट निकालने की सामर्थ्य नहीं थी सबको अपनी बुद्धि अल्प लगती थी ।

इतना अधिक जोर ? कह कर सिद्धराज खुद ही आगे बढ़ा अब तो मुझे ही हाथ उठाना पड़ेगा ।

महाराज ! वहाँ खड़े रहिये महाऽमात्य ने भी मोक्ष में भाकर कहा तू मुझ पर हुकम नहीं करे तो फिर करेगा ही कौन ? कहते हुये महाराजा महेता के विलगुल निकट पहुँच गये ।

महाराज फिर भी कहता हूँ कि वहाँ खड़े रहो महेताजी ने कहा और सिद्धराज के पाव एकदम थम गये महेताजी की किसी अद्भुत शक्ति ने महाराजा को वहाँ पर स्थिर कर दिया जहाँ खड़े थे ।

अचानक वातावरण पलटा स्वागता सभा में शान्ति छा गयी राज्य माता भोनलदेवी एकदम दौड़ते २ दिवान दाना में आकर खड़ी होगई और पूजा सिद्धराज यह क्या कर रहा है ?

रमत । वेवर्षाई भरे जयाप से माता का सत्कार हुआ जब मनुष्य गुस्से में आ जाता है और आपा भूल जाता है तब उसे कुछ नहीं सुझता वह चाह सो बोल देता है ।

रमत ? राज्यमाता ने सवाल किया  
 हाँ मुझे महेता नहा चाहिये  
 तब ? महाराज ने माता से कहा  
 मैं किसी भी मोघ लेंडगा  
 महाराज ने प्रण किया  
 महाराज ने



कारण ?

राज्य माता ने पूछा

मेरा अपमान

महाराजा ने कहा

अपमान मेरा कि तुम्हारा ? मरता जा बीज में ही बाल बड़े

महता जी ? शान्त होवो यह बालक है राज्य माता बोली

बालक नहीं परन्तु राजा हैं महाराजा न जाता हो इच्छ मुनाया

शान्त । राज्यमाता ने महेता की कहा

शान्त हान का हो ता अथ दुमर भव म महेताजी ने राज्य माता को जमाय दिया परन्तु तुमको देखना हूं और मेरा मन गृहपात पर धन हुआ हो तो भी शान्त हो जाता है वहन ? तुम न आई होती तो पाटण का पुण्य आज परवार गया होता प्राच महाराजा को गधर पढ जाती कि पाटण की गद्दी पर इनकी जरूरत केवल शोभा पूर्ति है धार्की राज्य तो जयावदार व्यक्तियों से ही चलता है।

वहन । तुम्हें प्यता हैं और स्वर्गीय महाराजा कर्ण याद आते हैं और उनके अतिम शब्द भी याद आते हैं तथा तुम्हारी वह कम्बुजात मूर्ति भी भाइ को बांधते वस्त की याद आती है यह महाऽमात्य पद व सूचक राज्यचिह्न तुम्हारे चरणों में भेंट करता है पाटण का महाऽमात्य पद अब मुझको नहीं चाहिये । महेताजी ने उमी गम्भीरता से राज्यचिह्न राज्य माता के सामने रख दिया पर है क्या ? राज्यमाता ने प्रश्न किया

कुछ नहीं । मानापमान को तो निगल गया हूं और फिर भी हनम कर जाता हूं स्वगन्ध महाराजा कर्ण के नाम के नीचे फिर

भी मैं महाराजा को फट जाता हू कि "जसमा" यों नहीं मिल सकेगी पाटण की प्रजा या समझती है कि आज महाराजा ने जसमा ओडण की आवरू लेने का इरादा किया है तो क्या कल पाटण की प्रजा की ही बहन घेटियों की आवरू नहा लें इसकी खातरी क्या ? इसलिये पाटण पर राज्य करना हो तो अब भविष्य में ऐसे मनोरथ कभी न करें ।

कौन जसमा ? मीनलदेवी स्तसा-घ हो गई ।

हा अभी ही उसे महाराजा के पजे से छुडाकर यहां से उस के देश की तरफ भेजने खाने की है । उसी के लिये तो युद्ध में गये हुए महाराजा यहां आये हैं । महेता जी ने स्वप्नी करण किया परन्तु इस बात की अब मुझे क्या डरकार है । बहन भेजने तो फल का ही निश्चय कर रखा था कि यह महाऽमात्यपद की जोखम दारी अब मुझे नहीं चाहिये । और प्रमात-तक तो पाटण में मेरी उपस्थिती भी नहीं रहेगी । महेताजी ने पीठ फेर कर ही यह वाक्य पुरा किया था थार आगे घडे मो सयक देरते > ही चले गये ।

मीनलदेवी ने आवाज दी महेता ?

परन्तु महेता ने जरा भी ध्यान नहीं दिया गुमें मारने पर भी पीछे तजर तक नहीं की जैसे एर परिग्रहधारी व्यक्ति प्रप्रग्रही होकर जगल में जावा हो । महेता जी ने भी पाटण ही नहीं परन्तु पाटण और सारी गुर्जर भूमि को त्याग दी हो इस प्रकार पाटण में होते हुए भी उपेक्षित बन गये । उन्हें अपने निश्चय में टिगाने की कोई समर्थ नहा हुआ और दुसरे रोज प्रमान होने

ही पाटण से विदा होगय राज्यमाता व पाटण की प्रजाके आगे  
 याना न बहुत कुछ कष्ट परन्तु महता जी ने अपन निश्चय को  
 बदला ही नहीं अन्त में सब द्वार खक कर कुछ दूर तक पहुँचा क  
 थापिस आ गये ।

### ग्रहण करने योग्य शिक्षा—

१ राज्य कारोबार में राजा का मंत्रियों का सैनिक का और  
 प्रजा का क्या सम्बन्ध है और महाराजा किस हद तक प्रजा पर  
 या मंत्रियों पर अपना हुक्म चला सकता है, और सत्यप्रिय न्याय-  
 परायण मनुष्य महाराजा की भी अनुचित हा में हा न मिलाते  
 हुए नग्न सत्य सुना देते हैं और समय आने पर प्रजा के धर्म कर्म  
 का रक्षण करने के लिये कदा तक आ मधुल पर दटकर अपनी  
 जान को आफत में डाल देते हैं यह महता जी के वर्णन से स्पष्ट  
 समझ में आ जाता है—२ आत्मबल एक अपूर्व बल है, जब यह  
 बल पूर्ण रूपेण प्रकट हो जाता है, तब इसके आगे सब बल  
 व्यर्थ हो जाते हैं । वडे २ शत्रु व श्लोकाधारी भी आत्म बल का  
 कुछ नहीं जिमाइ सकते आत्मबली राजा महाराजाओं को भी  
 कटु सत्य सुना सकता है उसको किसी की अपेक्षा नहीं रहती वह  
 महान् शक्ति शाली का भी मामना कर लेता है, यह महाऽमात्य  
 महता जी क उरण में दिखेगा । ३ जहाँ मनुष्य आवेश में आ  
 जाता है वहा वह भान भूल जाता है उसे अपने पूर्वों का  
 भी ख्यात नहीं रहता है उनके आगे भी यद्वतद्वा बोल जाता

हैं, और उन्हा अपमान कर बैठता है। महाराजा सिद्धराज भी अपनी माता के समक्ष किस प्रकार पेश आया है, यह देखिये।  
४ सत्य और न्याय प्रिय मनुष्या को अपन पनाधिसार का जरा भी मोह नहीं होता वे तुरन्त छोड़ देते हैं, परन्तु उसका दुरवयोग भी नहीं होने देते हैं, और छोड़े बाद उमरे मामने भी नहा देखते हैं।



## कलिदान



तावमहं त्व पाडित्य, कुलीनत्वं चिवेकिता ॥

यावज्ज्वलतिनाड्गोप, हत पंचेषु पावकः ॥ १ ॥

( भगवद्गीता शतक )

भावार्थ—ब्रह्म, पहिताई, विवेकता और कुलीनता ये सब मनुष्य के हृदय में बर्हातर ही कायम रहत हैं जबकि उसके शरीर में कामाग्नि प्रज्वलित न हो इससे यह सिद्ध होता है कि मनुष्य कामाग्नि के प्रदीप्त होने पर सभ्यता बुद्धिमत्ता विवेक और कृत्याऽकृत्य

का मानभूल जाता है फिर तो वह उसीके पीछे बड़े बड़े धनार्थ भी कर बैठता है और जगत में बदनाम भी होता है।

महाराजा सिद्धराज ने भी जसमा को येन येन प्रकारेण प्राप्त करने के लिये वहाँ तक प्रयत्न किया और अन्त में पाया यह इस प्रकारण में दिव्यार्थ देगा।

जसमा को मुक्त करा कर अपना राज्य पिन्द् सौंप के महता राज्यगड से चले गय तत्र महाराजा सिद्धराज ने आइ लोगो की तपाम कराई तो मालुम हुआ कि मोडेरा की तरफ आगे बढ़ रहे हैं। जिमको जिसकी लगनी लग जाती है उसको वही सुभता है दूसरा कुछ भी नहीं मंथ्या हुई थोड़ी रात्रि गइ कि महाराजा सिद्धराज याडे मनुष्यों (अगरसकों) को साथ लेकर किसी को मरान पडन देते हुए गुप्त रीति से मोडेरा की तरफ चल निकले। उनके पहले तो वे मोडेरा पहुँच गये। सामान भरे हुए गाड़े मोडेरा से आगे बढ़ते जा रहे थे। गाड़ाओं पर बैठे हुए ओहलोगों ने दस बारह घोड़े सवारों को पीछे से आते देखे। वे घोड़े चमके चलते हुए गाड़े रुका दिये गये। फिर ओहलोगों ने गाड़े से उतरती ओट खी गेम मालुम पडती थी कि वे अज्ञान और सबने परस्पर सलाह कर रसी हो इस तान में से निकलने के लिये ही ओहलोग उतर पडे शेष ओहलोगों ने गाड़े रुका दिये व ओहलोगों में आगे बढ़ी। गाड़े मोडेरा से निकलने के लिये यहाँ रहे हुए ओहलोगों ने मरान कर दिया।

एक युद्ध रथ त्रिया और व्युद्ध के बीच म रूप को अपसरा जसमा को गडा की ।

महाराजा सिद्धराज अग रक्तों सहित थोड़ी देर म वहाँ आ पहुँच ओडलोगों को गैरा बाल हुए देखे जो बीच में जसमा को लिये हुए गड ये ओडलोगों के पास भी शस्त्र आन्ति थे परन्तु वे नाम मात्र के-लेकिन य मुसज्जित थे । एक आर्य महिला की प्रतिष्ठा के खातिर उन्होंने अपने मरन का मय और जीवन की आश छोडरली थी ।

महाराजा सिद्धराज ने ननदीक आकर कहा—तुम लोग नैयार तो हुए हो परन्तु जो जीना चाहते हो तो जसमा को सोंप दो और चले जाओ किसी का बाल भी बाका नहीं होगा ।

ओड लोगों का नायक टोकम ओड पहले तो धूना किन्तु शीघ्र हो सचेत होकर उसने महाराजा का तिरस्कार किया ।

सिद्धराज क्रोधित हो गये और आक्रमण करने को हुक्म दिया टपा टप नि शस्त्र और गिना तालिम के ओड लोग घरती खाटने लगे । कितने ही साथी मरे कितने २ भाग छूटे और अन्त में ओडलोगों का नायक टोकम भी मारा गया । जीवित रही बँबल जसमा ।

सिद्धराज ने तुरन्त हुक्म दिया और शस्त्र म्यान हुए ।

रक्त रजित भूमि पर जसमा खड़ी थी । सिद्धराज अश्व से उतर कर उसके सामने आ खडे हुवे और बोले—क्यों अभी और चत्मकार देरना है ?

हो जसमा ने निडरता से कहा ।

अच्छा । सिद्धराज ने चिढ़कर कहा—और सैनिका की तरफ मुह कर के बोले तुम दूर खड़े रहो ।

सैनिक लोग सब दूर जाकर गोल घक्कर के आकार में खड़े रहे, सिद्धराज विलकुल जसमा के पास आये और बोले—

अब ? कोई है घबाने वाला महेता बहता ?

महाराज दूर रहना

जसमा ने जवाब दिया

कारण ?

महाराजा ने पूछा

में पाटण चलने को तैयार हूँ जसमा ने युक्ति का प्रयोग किया

ह । सिद्धराज आश्चर्य मुग्ध बन गया और कहने लगा पहल से ही समझ गई होती तो ?

रणढाये बाद उदापण आवे उसका उपाय ही क्या ?

जसमा ने मन में कहा

परन्तु मुझे पाटण मे ले जाकर करोगे क्या ?

गुर्जर देश को महारानी ? सिद्धराज ने अपने भाव प्रकट किये

महारानी ? महारानी तो बनाना तुम्हारी रानी को में महारानी

बनके क्या करूगी ? जसमा ने अपनी आँखों को स्थिर करते हुए

कहा और साथ ही महाराजा को असावधान दृग् कर छलांग मार

के महाराजा के हाथ से कटार छुड़ाने के लिये अपना हाथ मारा ।

महाराजा सिद्धराज उसके हाथ को दूर करना चाहत हैं ।

उससे पहले ही जसमा कटार ले लेती है । अब तक जो कटार

महाराजा सिद्धराज के हाथ में शोभ रही थी वही कटार जसमा

के हाथ में शोभने लगी । और वह गर्नर कर बोली । महाराज !



एक बगुन रथ चिया और छूट के बीच में रूप को जसमा जसमा को रक्षा की :

महाराजा सिद्धराज अग रक्तको सहित थोड़ी देर में वहाँ आ पहुँच ओहलोगों को जग घाल हुए दमे जो बीच में जसमा को लिये हुए गइ थे ओहलोगों के पास भी शस्त्र आदि थे परंतु वे नाम मात्र के लकिन य सुसज्जित थे। एक आर्य महिला की प्रतिष्ठा के नातिर उछाने अपने मरण का भय और जीवन की धारा छोड़रती थी।

महाराजा सिद्धराज ने ननरीक आकर कहा—तुम लोग नैयार तो हुए हो परंतु जो जीना चाहते हो तो जसमा को सौंप दो और चले जाओ किमी पा घाल भी बांका नहीं होगा।

ओह लोगों का नायक टीकम ओह पहले तो धृजा किन्तु शीघ्र हा सचेत होकर उसने महाराजा का विरस्कार किया।

सिद्धराज प्रोथित हो गये और आक्रमण करने को हुकम दिया टपा-टप नि शस्त्र और विना सालिम के ओह लोग घरती घाटने लगे। कितने ही साथी मरे कितने २ भाग छूटे और अंत में ओहलोगों का नायक टीकम भी मारा गया। जीवित रही केवल जसमा।

सिद्धराज न तुरन्त हुकम दिया और शस्त्र म्यान हुए।

रक्त रंजित भूमि पर जसमा रखी थी। सिद्धराज अरब से उतर कर उमके सामने आ लड़े हुये और बोले—क्या अभी और शत्मकार देरगा है ?

हाँ जसमा ने निहरता से कहा।

अच्छा। सिद्धराज ने चिढ़कर कहा—ओर सैनियों की मार-  
मुह कर के बोले तुम दूर खड़े रहो।

सैनिक लोग सब दूर जाकर गोल चमकर के आकार में खड़े  
रहे, सिद्धराज विलकुल जसमा के पास आये और बोले—

अब ? कोई है बचाने वाला महेता रहेता ?  
जसमा ने जवाब दिया

महाराज दूर रहना  
कारण ? महाराजा न पृष्ठा

में पाटण चलने को तैयार हूँ जसमा ने युक्ति का प्रयोग किया  
ह। सिद्धराज आश्चर्य मुग्ध बन गया और कहने लगा पहले

से ही समझ गई होती तो ?  
रण्डाये बाद उद्घापण आवे उसका उपाय ही क्या ?  
जसमा ने मन में कहा

परन्तु मुझे पाटण में ले जाकर करोगे क्या ?  
गुर्जर देश की महारानी ? सिद्धराज ने अपने भाव प्रकट किये

महारानी ? महारानी तो बनाना तुम्हारी राना को में महारानी  
बनके क्या करूंगी ? जसमा ने अपना आँसु को स्थिर करते हुए

कहा और साथ ही महाराजा को असावधान भेद कर दूलाग मार  
के महाराजा के हाथ से कटार छुड़ाने के लिये अपना हाथ मारा।

महाराजा सिद्धराज उसके हाथ को दूर करना चाहते हैं।  
उससे पहले ही जसमा कटार ले खड़े हैं। अत्र तर

महाराजा सिद्धराज के हाथ में सभे रा यो वही क...  
... न जोभने लगी। और वह रा...

चमकना मत तुम्हारे सैनिका के देखते देखते तुम्हारा रून पी सकती हैं। इतनी में हिम्मत रखनी है। और तुम्हारे किचे का बदला अभी का अभी ले सकती हैं। परन्तु मैं ऐसा करना नहीं चाहती। मरा राण्ड हुई तो भले ही हुई। परन्तु गुर्जर भूमि को राण्ड बनाना नहीं चाहती। यह कहने के साथ ही जसमा ने फटार आकाश में उंची उठाई और बोली।

लो जिस रूप के कारण मेरा परिवार तुमने नष्ट किया है वह रूप का यह जोखा ममालो।

महाराजा उसका हाथ पकड़ने को अपना हाथ फैलाते हैं। इतने में तो फटार जसमा की छाती में पहुँच जाती है। जसमा के गिरते हुए शरीर को महाराजा ने ममाला। आँसु खुलते ही जसमा ने महाराजा सिद्धराज को अपने पास बैठा देखा। धक्का मारकर तिरस्कार पूर्वक अपना मुँह फेर लिया। आमपास महाराजा सिद्धराज के अग रक्षक अपना मलीन मुँह किये हुए गड़े थे। और महाराजा सिद्धराज उस कुम्हलाते हुए पुष्प पाखंडी का सौरभ मिचने को ठण्डी मास लेते हुए, आँसु से मोतियों की वर्षा कर रहे थे। और अपने किये हुए का पश्चात्ताप कर रहे थे। कहा भी है कि—

बिना विचारे जो करे, सो पीछे पड़ताय।

काम बिगारे आपनो, जग में होत हसाय ॥ १ ॥

कोई कहानी व गरबी में ऐसा भी कहा जाता है कि फटार साकर मरने मरत जसमा ने महाराजा सिद्धराज को श्राप दिया

था कि—“तेरा तालाब भरे नहीं और तेरा बरस निर्य श जाय यह कहा तक मत्य है सो तत्व केवली गम्य है, यह भी कहावत है कि सती श्राप देती नहीं ।

### टिप्पणी—

१ जो मनुष्य काम के बशीभूत हो जाता है उसको बर्ण दिया जाता है और उसी को प्राप्त करने के लिये विवेक को छोड़ केसा पीछे पड़ता है कि चाहे कितना ही भयकर पाप करना पड़े वह जरा भी नहीं हिचकिचाता उसके लिये मनुष्यों का संहार करने को भी तैयार हो जाता है जो महाराजा सिद्धगज के प्रयाग वर्णन में दिनाया है । २ सत्वशाली आत्मा अपने आश्रीय जनों का संहार हो जाने और निराधार स्थिती में आने पर भी प्रीति को नहीं त्यागते और मौका पाकर अपने प्राणों का इच्छितान कर देते हैं, परन्तु किसी का अकल्याण नहीं करते जो परमात्मा के आदेश से दिखाई देगा । ३ शत्रु को दनाकर या नारा करके शत्रु को नष्ट नहीं कर सकता किन्तु अपना बलिदान करने के शत्रु के दिल से भी शत्रुता नष्ट हो जाती है और वह शत्रु शत्रुत्व का पश्चाताप करता है, यह जसमा के बलिदान और महाराजा सिद्धराज के पश्चाताप से सिद्ध है । ४ जिनके शत्रु का शत्रुत्व न विचारते हुए जो उसमें आगे बढ़ता ही जाता है । उनके शत्रु सिवाय पश्चाताप के और क्या मिहता है । शत्रु को नष्ट करने जाना जा सकेगा ।



